मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख सलंग अंक १८८/१८९ मार्च-अप्रैल-२०२२

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

मंदिर की समूह आरती
જય શ્રીસ્વામિનારાયણ

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७

प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.in

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १५ ● अंक : १८८/१८९ ● मार्च-अप्रैल-२०२३

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री,
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३ अहेवाल और संस्मरण ०६

०४ श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृत वचन ३६

अस्मदीयम्

अपने श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय में प्रत्यक्ष अपने आराध्यदेव भगवान श्री पूर्णपुरुषोत्तम परमात्मा विराजमान है । हम सभी उनकी मूर्ति में साक्षात् समझकर भक्ति उपासना करते है । हम लोग बड़े से बड़ा पर्व और उत्सव मनाते है । तभी वह विना रुकावट के पूर्ण होता है । दर्शनार्थी परमानंद को प्राप्त करते है । हम सभी साक्षात् भक्त है । ऐसा महाराजजी स्वयं वचनामृत में कहे है । श्रीकृष्ण भगवान का साक्षात् निर्णय है । उसकी भक्ति करने वाला तथा दर्शन करता हो । जो अपने को पूर्णकाम नही माने और अन्तःकरण मे खालीपना रखे इन लोगो को भगवान का तेजोमय रुप है । उसे पूर्ण रुप से नही देखते है । तो उनका पूर्ण कल्याण नही होता है । जो अज्ञानी हो । उनके मुख से भगवान की बात नही सुनना चाहिए । इस लिये जिसें भगवान के प्रति अनन्य निष्ठा हो, उसे भगवान के अलावा कुछ चाहिए नही । श्रीजी महाराज के वचन के प्रमाण से पर्व और उत्सव के अलावा कुछ नही रखते है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

दर्शनीय हवेली मूलीधाम

twitrounds.com

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०२३)

२५ भुज मंदिर श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी महोत्सव की पत्रिका देने आये संत-हरिभक्तो को दर्शन देने के लिये पधारना।

३० रामनवमी-श्रीहरि प्रागट्योत्सव में अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर अक्षरभुवन में बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव अवसर षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०२३)

१ से १६ अमेरिका जेक्सन विले में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना वहाँ से सिनासिमाटी चेप्टर पर पधारना।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद फाल्गुन सुद-३ परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०१ वर्ष के पाटोत्सव में षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो द्वारा करके सभा में सभी आशीर्वाद दिये।

(मार्च-२०२३)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप गाँव में भाईयो तथा बहनो का क्रमश ३८ वाँ और २४ वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।
श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया मंदिर के १६ वे पाटोत्सव पर पधारना।

८ श्री नरनारायणदेव फुलदोलोत्सव के अवसर पर अहमदाबाद के प्रसादी चौक में रंगोत्सव, फूलदोलोत्सव मनाया गया।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर लीलापुर (बहनोका) (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा पर पधारना।

१२ मूली मंदिर द्वारा मनाया गया ''उत्सव'' में सेवा प्रदान करने वाले स्वयं सेवको का सन्मान के अवसर पर पधारना।
श्री स्वामिनारायण मंदिर रामपरा (मूली देश) के ५ वे पाटोत्सव पर पधारना।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर श्री रेवतीजी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक स्वयं के कर कमलो से पूर्ण किये।
नूतन भोजनालय का उद्‌घाटन तथा सभा को आशीर्वाद दिये।

१८-१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटा (राज.) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा अपने करकमलो से पूर्ण किये।

२५ भुज मंदिर श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी महोत्सव की पत्रिका देने आये हरिभक्तो तथा संतो को सभा में आकर दर्शन दिये।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ (बहनोका) (मूली प्रदेश) के मूर्ति प्रतिष्ठा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर पाणशीणा (मूली देश) गाँव में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में आशीर्वाद दिये।

३० रामनवमी-श्रीहरिप्रागट्योत्सव के दिन अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर अक्षरभुवन में बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव के अवसर पर षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये।

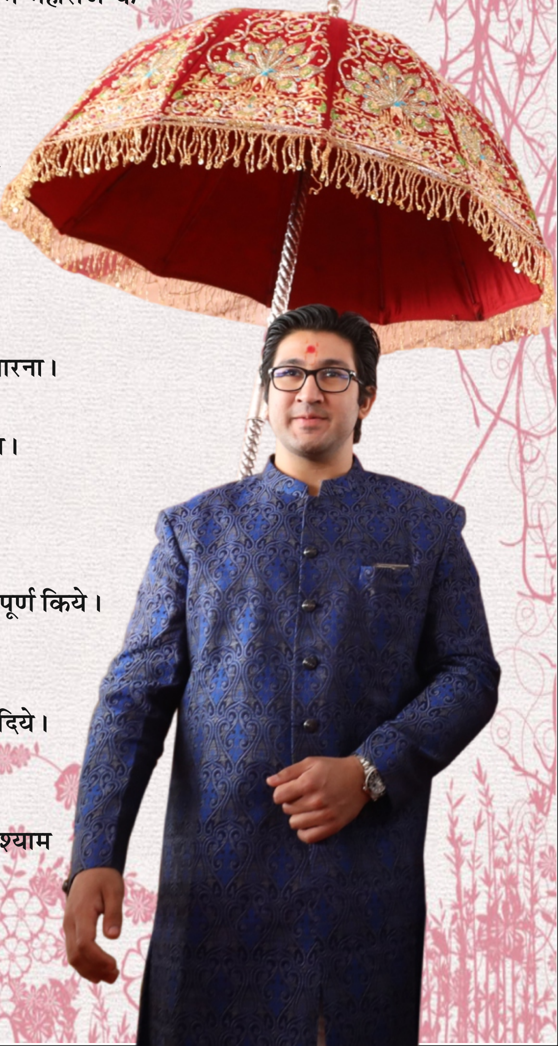

मूळी उत्सव

अहेवाल

नविनजीमृतसमानवर्णं रत्नोल्लसत्कुण्डलशोभिकर्णम् ।
महाकिरीटाग्रमयूरपर्णं श्रीराधिकाकृष्णमहं नमामि ॥

अपने आश्रितो के आत्यंतिक कल्याण के लिये भगवान श्री स्वामिनारायण तीन गूढ संकल्प दिये । उसमें से सर्वप्रथम उपासना की शुद्धि हेतु मंदिर बनाकर अपने स्वरुपो को स्थापित करना था । श्रीहरिने गुजरात की धरा पर नव-नव महामंदिरो का निर्माण कराके स्वरुपो की स्थापना अपने हाथो से किये थे । सम्पूर्ण भरतखंड के मध्य गुजरात के ये मंदिरो की महिमा स्वयं शेषनारायण सहस्त्र मुख से गाये तो भी पार नही पा सकते है । जो व्यक्ति जितना जानता है । उतना सुख पाता है । मंदिर के दूसरे क्रम में मूली मंदिर के वि. सं. २०७९ वसंत पंचमी के दिन २०० वर्ष पूर्ण होने से द्विशताब्दी महोत्सव ''उत्सव'' नामाभिधानके साथ मंदिर में विराजमान महाप्रतापी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव देश गादी पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से, प.पू.

मूळी उत्सव संस्मरणो

भविष्य आचार्य श्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षता में तथा उनके पूर्ण मार्गदर्शन में सम्पूर्ण धर्मकुल परिवार के सानिध्य से तीर्थो में रहने वाले ब्रह्मनिष्ठ संत, सांख्ययोगी माताये एवम् लाखो हरिभक्तो की उपस्थिति में भव्य और दिव्य एवम् हर्षोल्लास के साथ ता. २०-०१-२०२३ से ता. २६-०१-२०२३ तक स.गु. श्री ब्रह्मानंद नगर मूली धाम में मनाया गया है।

इस महोत्सव के अर्न्तगत भव्य पोथीयात्रा महोत्सव उद्घाटन, दीप प्रगटीकरण, श्रीमद् सत्संगीभूषण ग्रंथ राजकी कथा पारायण उसी प्रकार से कई सत्संग संवर्धन कार्यक्रम जैसे महिला मंच, युवक मंच, रात्रि के कार्यक्रम, सामाजिक सेवा मेडिकल कैम्प, पर्यावरणलक्षीय सेवा, स्वास्थ्य, जनजागृति, मानव जीवन उत्थान कार्य, प्रेरणात्मक कई कार्य तथा देवो को प्रतिदिन अलग-अलग अन्नकूट छप्पन भोग, राजोपचार, पूजा, पुष्पाभिषेक, पंचामृत अभिषेक भव्य समूह महापूजा, विशाल हरियज्ञ आदि इस महामहोत्सव में महोदित्वानंद असंख्य हरिभक्तने प्राप्त किया। जिस ने भी इस महोत्सव में तन, मन, धन से सेवा किया है। उनका मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज आदि देव सभी प्रकार से कल्याण करे। ये निश्चित बात है।

(महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिप्रकाशदासजी - मूलीधाम)

पत्रिका लेखन और विजयस्तम्भ स्थापना : राधाकृष्ण देव के चरणो में अहमदाबाद तथा मूली देश के वरिष्ठ संत के साथ बैठकर प.पू. महाराजश्रीने श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की चित्र वाली कुमकुम पत्रिका सर्व प्रथम श्री राधाकृष्णदेव को अर्पित करके बाद में विमोचन करके श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो का हस्ताक्षर लेकर इस पत्रिका को सभी भक्तो तथा धर्म प्रेमियो जनता को इस उत्सव में तन, मन, धसन भाग लेने निमंत्रण दिया गया।

पूर्व की तैयारी

पदयात्रा
प्रेरणा
पत्रिका लेखन
विजय स्तंभ स्थापना

पोथीयात्रा

यशस्वी यजमानश्री का योगदान : उत्सव धार्मिक हो या सामाजिक इसमें धन की अधिक आवश्यकता पडती है। मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय में नारायण के साथ लक्ष्मीजी नी साक्षात् विराजमान रहती है। इससे धन की कमी रहती ही नही है। हरि भक्त ठाकुरजी को देते है। तो सामने मुरारी किसी का उधार रखते नही है। व्याज सहित गिरधारी वापस देते है। ठाकुरजी अनंत गुना करके दाता को देते है। उत्सव समैया में कितना भी खर्च हो। अन्त में धन बढ जाता है। उत्सव के मुख्य यजमान के पद पर अ.नि.प.भ. गांडाभाई जुगलदास पटेल परिवार कथा पारायण के मुख्य यजमान पद पर, ठाकुरजी के पाटोत्सव के यजमान पद पर अ.नि. नटवरलाल छगनलाल हालाणी (सुरेन्द्रनगर-मकनसर) परिवार तथा धर्मकुल पूजन के यजमान पद पर सद्. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर की प्रेरणा से श्रीजी सिरामिक ग्रुप (मोरबी) (रवापर-कच्छ), अ.नि. केशराभाई के. भगत और प.भ. रतनशीभाई के. भगत परिवारने दिव्य लाभ उठाया था। इसके अलावा हरियज्ञ, रंगोत्सव, वसंत की पूजा, हवेली दर्शन द्वार का उद्घाटन, ठाकुरजी का महाभिषेक, छप्पन भोग, २०० संहिता पारायण, संतो की पूजा छोटी-बड़ी सेवाओ में १०६० जितने यजमानश्रीने अपने सद्लक्ष्मी का दानक रके यजमान पद का लाभ उठाये थे।

पोथीयात्रा और शुभारम्भ : ता. २०-०१-२०२३ को प्रातः पूरे जोश से पोथीयात्रा मंदिर से प्रस्थान की थी। श्री मांडवरायजी के मंदिर के पास से होती हुई। दोहा दंड का गायनकरते संगीत मय वातावरण में अबील गुलाल के साथ उत्सव निकाला गया। यहा अंत में उत्सव स्थल ब्रह्मानंद नगर तक मनाया गया था।

प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्रीने निज मंदिर में देवो का श्रृंगार आरती किये। संतो तथा यजमानो के साथ संगीतमय वातावरण में भक्ति भाव वाले माहौल मे देवो का जयघोष करते हुए। उत्सव के मुख्य द्वार ब्रह्मानंद स्वामी प्रवेश द्वार का उद्घाटन किये थे।

जप यज्ञ मंदिर में मूली देश के अनेक प्रांत के भाई-बहन तथा सभी हरिभक्त सात दिन तक अखंड स्वामिनारायण महामंत्र की धुन किये थे।

ब्रह्मानंद कथा मंडप के मुख्य प्रवेशद्वार का उद्घाटन भूदेवो द्वारा वेदोक्त मंत्रो से पूजन करके वरिष्ठ संतो के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ रहकर उद्घाटन की पट्टिका खोले थे। संहिता पाठ के लिये १०० की संख्या में संत और भूदेव विराजमान थे।

भगवतकथा के माध्यम से प्रत्येक श्रोतागण के अंतर में विशेष प्रकाश का प्रवेशन तथा शुभ भावना से श्रीहरि के दोनो अपर स्वरुपो ने मूली, अहमदाबाद और भुज देश के वरिष्ठ संत, यजमानश्री, ठाकुर साहब और युवराजजी साथ रहकर दीप प्रगट किये थे। प.पू. बड़े महाराजश्रीने मंगल आशीर्वाद तथा शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) के मंगल उद्बोधन से कथा के प्रथम वक्ता पद पर मूली मंदिर के स.गु. महंत शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी के मुख से श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा पारायण को प्रारम्भ किया गया। कथा के दूसरे वाचक स.गु. शा. स्वा. व्रजवल्लभदासजी (मूली) जी थे। प.पू. लालजी महाराजश्रीने प्रत्येक संहिता पाठी संतो को और भूदेवो का पुष्पमाला पहनाकर सन्मानित किये थे।

सभा मंडप के दरवाजे से : अपने उत्सव के बडे मंडप में कथा के केन्द्र बिन्दु भगवान होते है। श्रीहरि के चरित्र से पूर्ण शास्त्र अर्थात् स.गु.पु. श्री वासुदेवानंद वर्णी रचित भक्ति शास्त्र श्रीमद् सत्संगिभूषण, दोनो विद्वानो ने अपने संगीतमय शैली में प्रत्येक दिन सात दिन तक सुबह-शायं लाखो श्रोतागण सुनकर भक्ति के रस में तरोबार हुए। मूली, अहमदाबाद और भुज मंदिर के हमारे विद्वान संतो ने प्रसंगोचित प्रवचन दिये थे। भक्तगणो को आशीर्वादभी दिये।

मंगल प्रारंभ

उत्सव
SK GOLD
सभा मंडप

कई बड़े राजनैतिक हस्तियां समाज के सम्मानित तथा अन्य धार्मिक महानुभाव आमंत्रित मेहमान आकर उत्सव की शोभा बढाये थे। श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप का नित्य सानिध्य मिला था । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा सम्प्रदाय की मर्यादानुसार अलग से बैठकर व्यवस्था से बहनो को दर्शन का लाभ लिये थे । यु.एस., यु.के. आफ्रिका, ओस्ट्रेलिया और केनाडा से एन.आर.आई. भक्त आये थे ।

शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजी (मूली) प्रेरित प.भ. हिम्मतभाई एम. मोरसिया द्वारा लेखन किये गये । भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य अलौकिक चरित्र ''योगेश्वर के दिव्य ऐश्वर्य'' शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (हलवद) प्रेरित ''विचर्या श्रीहरि मूली देश में'' तथा महंत शा. स्वामी हरिप्रकाशदासजी (मूली) के संशोधन से और प.भ. श्री हिंमतभाई के सहयोग से प्रकाशित थयेल हुई नयी आवृति ''शिक्षापत्री'' (नित्य नियम के साथ), ''कीर्तन सरिता'' और ''कविसम्राट स.गु. ब्रह्मानंद स्वामीनो महिमा'' उसी प्रकार प.भ. श्री जेठाभाई सवाणी (यु.के.) द्वारा अर्पण किया गया सौजन्यसे और लेखन से प्रकाशित थयेल ''मूलीधाम की गौरव गाथा'' (गुज. और अंग्रेजी) इन सात सत्शास्त्रो का विमोचन वरिष्ठ संतो के साथ श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के कर कमलो द्वारा पूर्ण हुआ । सौजन्य दाताश्री तथा लेखकश्री का सन्मान किया गया था ।

स्टेज पर मूली के वरिष्ट संत श्रीहरि के बडे भाई रामप्रतापभाई आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री, कविसम्राट स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी और प्रथम महंत स.गु. देवानंद स्वामी के मूलीधाम के प्रति प्रेम समर्पण को याद करके चारो विभूतियो का दिव्य पूजन किया गया था । साथ ही साथ प.पू. बड़े महाराजश्री मूली के प्रति लगाव को याद करकें उनका भी पूजन किया गया । वरिष्ठ संतो का सम्मान किया गया । विप्र बटुको का यज्ञोपवीत तथा ब्रह्मचोरासी किया गया था । कथा मंडप में सभी श्रोतागण द्वारा व्यास पीठ और स्टेज पर ठाकुरजीकी समूह आरती की गयी थी ।

महिला मंच : ता. २३-०१-२०२३ के दिन मध्याहन के समय प.पू.ल.स्व. गादीवालाश्री के आज्ञा आशीर्वाद से तथा पू.श्रीराजा और सांख्ययोगी बहनो के सानिध्य में महिला मंच का सुंदर आयोजन किया गया था । इस में मूली देश की लडकियाँ और युवतियाँ रास, सांस्कृतिक कला संरक्षित रखी है । उन्हे प्रोत्साहन मिले । इस लिये स्टेज पर कला दिखाने का अवसर दिया गया । प.पू.श्रीराजाने सांख्ययोगी बहनो के साथ मिलकर दीप जलाये थे । श्रीराधिका कृष्णाष्टक से शुभारंभ किये थे ।

हालारी युवती मंडल सुरत, पालनपुर पाटिया, राजकोट, सुवासिनी युवती मंडल सुरेन्द्रनगर, मोरबी का युवती मंडल, मकनसर का युवती मंडल और बालिका मंडल, राधाकृष्ण महिला मंडल, सुरेन्द्रनगर बालिका मंडल और रतनपर बालिका मंडल द्वारा नंद रचित कीर्तन के साथ रासोत्सव मनाया गया था । सुरेन्द्रनगर की कु. प्राची पी. परिख नाम की छ वर्ष की कन्या संगीमय शैली में कैसियो से भजन गाई थी । रामपरा गाँव की क्षत्रिय परिवार की ११ वर्ष की कु. किया और खुशाली सिंधव ये बच्चियाँ साफा बांधकर दोनो हाथ में तलवार लेकर रास किये थी ।

युवा मंच और रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रम : जिस प्रकार श्रीजी महाराज प्रत्येक कला को स्वीकार करके प्रोत्साहन देते थे । इस कला के माध्यम से स्वस्वरुप की पहचान देकर सबको खुश करने वाली परम्परा में प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा और आशीर्वाद से बालको में, युवको में और लोक साहित्य कलाकारो में समाज में संस्कार को प्रेरित करे । ऐसी यह महत्वकी कलाये है । उसके प्रोत्साहन के लिये मंच की सुविधा प्रदान की गई ।

युवक मंडल द्वारा, रतनपर के भरवाड तथा स्वामिनारायण युवक मंडल, हालारी सुरत, पालनपुर पाटिया युवक मंडल हालारी भक्त धुलकोट युवक मंडल तथा रणजीतगढ बालमंडल इत्यादि मंडलो द्वारा ट्रेडिशनल ड्रेस में रास खम्बे पर रास में युवको ने श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज को बिराजित किये थे । रंगबिरंगी रेशमी पट्टी से सजाये थे । झालावाडी रास,

देवो के अनेक प्रकार का अन्नकूट दर्शन

उत्सव

भोगावो नदी की पूजा

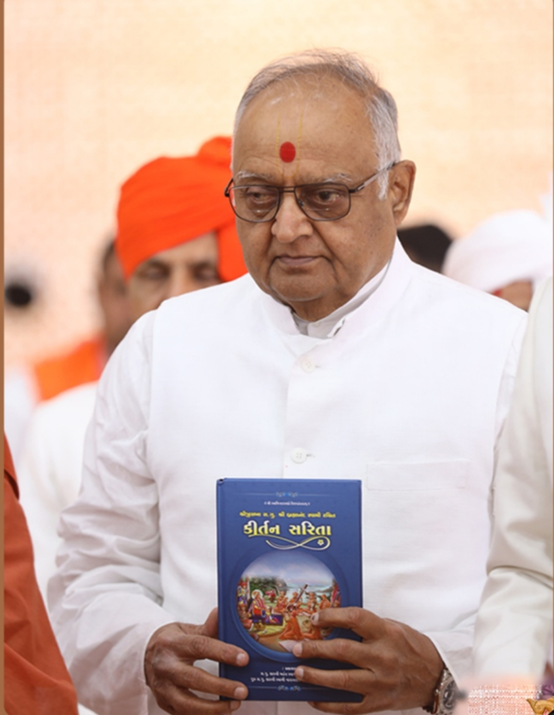

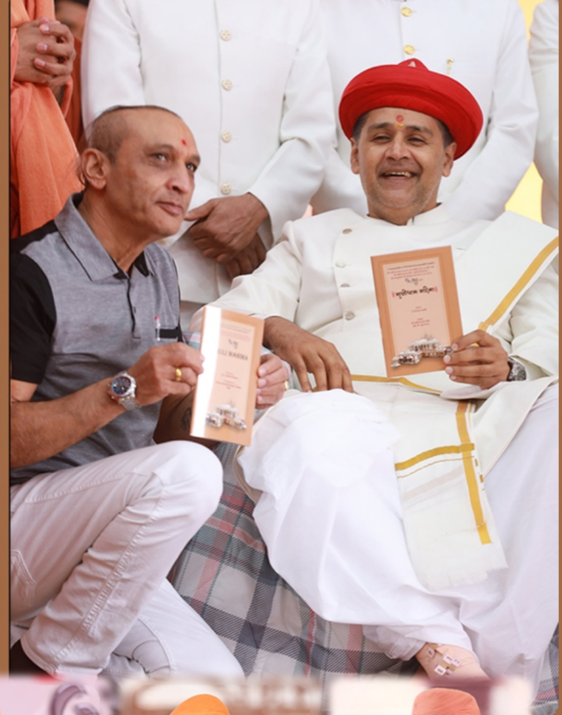

पुस्तक विमोचन

हालारी रास, हुडो रास तथा अठंगो रास नंद संत द्वारा रचित कीर्तन के साथ प्रस्तुत किया गया था।

संस्कार एवम् सत्संग को प्रेरक रुप में दर्शाने के लिये रुपक रुप में प्रस्तुत किया गया था। ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा रचित कौवाली का गान भी हुआ था। व्यक्तिनृत्य भी किये गये थे। पार्षदो एवम् युवको द्वारा सत्संग में निष्ठा बढे ऐसा प्रवचन दिया गया था। श्री स्वामिनारायण विद्यालय मकनसर के विद्यार्थी कलात्मक रुप से राष्ट्रध्वज वंदना, पिरामिड नृत्य भी किये थे। गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश भक्ति गीत शहीदवीर भगतसिंह के रुपक में किये थे। आदित्य गढवी, राजभा गढवी इत्यादि प्रसिद्द संगीत साहित्यविद, लोक साहित्यकारो तथा उर्वशीबेन ऋषभभाई आहीर तथा ऋषदीपभाई इत्यादि प्रसिद्ध गायक कलाकारो द्वारा संगीतमय शैली में कीर्तन दोहा, तथा छंदो और लोकगीत की व्यवस्था की गई थी। तथा संस्कार प्रेरक शौर्य कथाये और निर्दोष हास्य रस की बाते की गई। सभी कलाकारो का यथोचित सन्मान किया गया था।

शाकोत्सव : श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के कर कमलो द्वारा ता. २४-०१-२०३ के दिन स्टेज पर बैगन की सब्जी बनायी गयी थी। प.पू. महाराजश्री अपने हाथ में तवेथा लेकर सब्जी को मिलाये थे। उस दिन दोपहर के भोजन में प्रत्येक संत-हरिभक्त को श्री राधाकृष्णदेव का स्मरण कराते हुए। बाजरे की रोटी तथा सब्जी, मिष्टान के साथ खिलाया गया था। सभी लोग इसके कृतज्ञ हुए।

भक्तगणो की भावना को स्वीकार करना : मंदिर के संकुल विस्तार हेतु मूली के प्रकाशभाई शुक्ल और विश्वासभाई शुक्ल इन दोनो भूदेवोने मंदिर से लगे अपनी जमीन को कृष्णार्पन कर दिये। उसी प्रकार रामपरा गाँव के एक छोटे बालकने श्री ऋषिराज रविभाई चावडा ने अपने स्वजनो से प्राप्त भेट को लगभग एक लाख रुपये उत्सव में प.पू. महाराजश्री के करकमलो पर अर्पण कर दिया था। प.पू. महाराजश्री उसके पिता एक उसको द्वारा पहनाकर सन्मान किये। आशीर्वाद देते समय बोल उठे कि ''अपने गुल्लक में से रुपये बनाकर उत्सव में श्री राधाकृष्णदेव को दिया है। इस लिये ध्वज तो फहरेगा।

प.पू. महाराजश्री सपरिवार उत्सव के कार्यक्रम में पधारे थे। आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की परम्परा में पूजनीय श्रीहरिकृष्ण महाराजको भी लाये थे। सभी को स्टेज पर भव्य दर्शन श्रीहरिकृष्ण महाराज का कराये। इसी प्रकार से सुहासिनीबा के प्रसादी रुप कांबी और कडे का पूजन किया गया था। सभी ने दर्शन भी किया। एल.ई.डी. पर मूली के प्रत्येक प्रसादी के स्थल का दर्शन कराया गया। शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (हलवद), शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा. स्वा. सेवावत्सलदासजी, शा.स्वा नित्यप्रकाशदासजी तथा पार्षदश्री भरत भगत अच्छे से सभा का संचालन किये थे।

त्रिदिनात्मक श्रीहरियज्ञ महायज्ञ : पर्व महामहोत्सव में यज्ञ शालाका निर्माण किया गया था। बाँस से निर्मित यज्ञ क्षेत्र १३१ कुंडी यज्ञशाला बनी थी। यह कार्य उत्सव में भी किया गया था। चार वेद के नाम पर चारो दिशाओ में उन्हे वेदो के नाम का प्रवेशद्वार बनाया गया था। ४०० जितने यजमान विगत तीन दिन से भूदेवो द्वारा उच्चरित ऋचाओ के साथ आहुति दिये थे। श्रीफल को डालकर धर्मकुल की उपस्थिति की जय किया गया।

महापूजा : महापूजा के मंडप में प्रतिदिन प्रांत अनुसार १००० लोग महापूजा का लाभ उठाते थे। प्रतिदिन धर्मकुल के हाथो से आरती पूर्ण की जाती थी।

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली नगर गाथा : प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से महंत शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी (मूली) और महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) मिलकर मूली मंदिर तथा नगर का अथ-इति इतिहास का संकलन करके २० मिनट की एक टेली फिल्म बनाये थे। थीयेटर की तरह विशाल डोम में बैठकर प्रतिदिन हजारो लोग इस

राजोपचार

फिल्म को देख कर गौरवान्तित हुए ।

हवेली दिव्य प्रदर्शनम् : वि.स. १९३२ में मंदिर के पीछले भाग में चार मंजिल की काष्ठकला से निर्मित जो शीशम के लकडी से बनी है । यह हवेली । ईतिहासकारो तथा पुरातत्वविदो के लिये रस प्रद है । इस हवेली का जीर्णोध्धार करके दिव्य प्रदर्शन की योजना करके श्रीजी महाराज से जुडी हुई अनगिनत प्रसादी की वस्तुओ को व्यस्थित करके दर्शन हेतु रखा गया था । ता. २१-०१-२३ के दिन भव्य आतिशबाजी के साथ प.पू. धर्मकुल के कर कमलो द्वारा किया गया था । आधुनिक इलेक्टानिक्स का उपयोग करके अलग-अलग बिन्दु को दिखाया गया था ।

गृहउद्योग, आयुर्वेद और नशामुक्ति के लिये प्रोत्साहन : गृह उद्योग से स्वरोजगार बढता है । उत्पादक तथा उपयभोक्ता दोनो को लाभ मिलता है । बिना किसी दुष्प्रभाव वाली आयुर्वेदिक दवाओ का जन मानस में प्रभाव डाले । इसी शुभ उद्देश्य से ग्राउन्ड पर कई संस्थाओ द्वारा प्राकृतिक

वस्तुओ की विक्री हेतु आदेश दिया गया है । जिस में हथकरघा, हैण्डीक्राफ्ट, के तोरण, गृह उद्योग वस्तुए, शरीर में दर्द निवारण की औषधियाँ, शुद्द मधु, योग से शरीर की रक्षा करने में मदद एवं मार्गदर्शन उपलब्ध था । नशामुक्ति के लिये सभी प्रकार की सलाह, आयुर्वेदिक दवाये, मुखवास वाले पान का स्वाद दर्शको ने लिया था ।

अपने ''श्री स्वामिनारायण'' मासिक कार्यालय द्वारा दाताओ के सौजन्य से कई नये आजीवन सदस्य बनाये गये ।

स्वास्थ्य सेवाये : जो श्रीजी महाराज को अच्छा लगता है । वही अपने प.पू. धर्मकुल का अच्छा लगता है । माता-पिता, गुरु और रोगी.... शिक्षापत्री श्लोक नं. १३९ में श्रीहरि के आज्ञानुसार रोगी की सेवा द्वरा आधार की मानव सेवा हो उसी शुभ उद्देश्य से प्राथमिक उपचार, आर्थोपेडिक, स्किन कैन्सर इत्यादि के विशेष पर्व के मध्य सेवा दिये थे । इस में निशुल्क स्वास्थ्य सेवाये दी गई थी ।

सामान्य जाँच : ९४४ सर्व रोग निदान दवा के साथ ६७८, आर्थेपडिक मदद ३४२, मधुमेह **पोथीयात्रा और शुभारम्भ :** ता. २०-०१- की जाच) ३३८, केन्सर जाँच बहनो के लिये पेप टेस्ट २८३ इसके अलावा ३४६ रोगियो का x - ray, २८२ रोगियो का ECG तथा ८९३ व्यक्तियो का आयुष्यमान कार्ड बना कर दिया गया था । संत, पार्षद और भक्त गणोने इंडियन रेड क्रास सोसासयटी को ३४० बैग ब्लड दान किया गया । स्वास्थ्य लक्षीय सामाजिक जागृति सेमिनार मे डॉ. राजदीप चौहान आदि विशेषज्ञ डाक्टर ने रोगोकी जानकारी एवम् उपचार के विषय में मार्गदर्शन दिये थे ।

भोजन प्रसाद की सेवा : श्रीजी महाराजने संतो, भक्तो ब्राह्मणो तथा प्रत्येक मनुष्य को भोजन खिलाकर तृप्त किये । शिक्षापत्री में आज्ञा भी किये है कि

भगवन्मन्दिरं प्राप्तो योऽन्नार्थी कोऽपि मानवः ।
आदरात्स तु सम्भाव्यो दानेनान्नस्य शक्तितः ॥

स्वास्थ्य

महिला मंच

युवा मंच

रात्रि के सांस्कृतिक कार्यक्रम

शाकोत्सव

भगवान के मंदिर के प्रति आये प्रत्येक अन्नार्थी मानव : इसी परम्परा के आधार पर मूल सम्प्रदाय में उत्सव-समैया में कही अन्नदेने का स्थल नही होता है । उत्सव में आठ बडी रसोईघर रात-दिन संतो-भक्तो ब्राह्मणो तथा सभी के लिये । प्रातः एक मिठाई के साथ नास्ता, दोपर हमें दो और समापन के दिन तीन मिठाई के साथ भोजन प्रसाद और शायं के समय भोजन में भारतीय संस्कूति के अनुसार हल्का सुपाच्य भोजन दिया गया । जो लोग आये । उन सभी को भोजन दिया गया । लोग भोजन ग्रहण करके तुप्त हुए थे । प्रातः दोपहर शायं दो-दो घंटे तक का यह भोजन करने का अवसर दिया जाता था । कितने लोग कब भोजन करने आयेगे । किसी को अनुमान नही रहता था । लेकिन साक्षात् देव के प्रताप से सब

यज्ञ

समूह महापूजा

कुछ पूर्ण हो जाता था । स.गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी को श्रीजी महाराजने रसोई की मास्टरी दिये थे। आप संतो तथा स्वयं सेवको के साथ रखकर समयोचित सेवा लिये थे ।

मंदिर लेजर लाइटींग शो और पूजन : उत्सव के पहले निज मंदिर के जीर्णोध्धार के लिये संगमरमर की सेवा पूरी की गयी थी । पाटोत्सव के पूर्व संध्या को ता. २५-०१-२०२३ को साम के समय मंदिर के दिव्य प्रांगण में धर्मकुल के सानिध्य में कीर्तन-भजन लाईटींग साउन्ड के साथ किया गया था । आतिशबाजी भी की गयी थी । हवेली और मंदिर की पूजा करके समूह आरती की गई । ब्रह्मानंद स्वामी रचित वीररस के पदो के साथ एल.ई.डी. पर मूली निजमंदिर के मुख्यगेट के दोनो तरफ दो सिंहाकृति है । उसका बार-बार दर्शन कराके ।

देव सेवा : देव सेवा अपने उत्सव का हदय और केन्द्र बिंदु होता है । श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री में आदेश दिये है । देव का उत्सव है । देव के लिये उत्सव है । इसी न्याय के आधार पर श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के समझ निजमंदिर में चोकलेट, अनेक प्रकार शरबत, फल, अनेक ज्यूस, ड्रायफ्रूट, अनके साग-भाजी, खोये की अनेक प्रकारकी मिठाईयो का अन्नकूट, पाटोत्सव के दिन छ्प्पन्न भोग अन्नकूट का दर्शन कराया गया । स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी के पूजा को श्री शालीग्रामजी की सवा लाख तुलसी के पत्र द्वारा भाव पूजन और पुष्पाभिषेक किया गया था । जल यात्रा तथा श्री ठाकुरजी की नगर यात्रा के कार्यक्रमो की भव्यता और दिव्यता से सम्पन्न थी । श्री ठाकुरजी का वस्त्र, अलंकारो की यात्रा स्टेज तक लाकर पूजा तथा नये वस्त्र पहनाये गये थे । निज मंदिर में देवो का तथा सभा मंडप में श्री घनश्याम महाराज का दिव्य श्री राजोपचार महापूजा तथा फूलो से अभिषेक किया गया था । इस अवसर पर सभा मंडप में रासोत्सव किया गया था । शायं को श्री भोगवती गंगा पूजन-उत्सव करके महा आरती की गयी थी ।

ता. २६-०१-२०२३ पाटोत्सव को प्रातः यजमानश्री द्वारा पाटोत्सव अभिषेक पूजन तथा श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के कर कमलो द्वारा देवो का भव्य अभिषेक पुष्प वर्षा की गयी थी । महाभिषेक के समय दर्शनार्थियो की अधिक भीड थी । धर्मकुल के हाथ से पूजन किये थे । ठाकुरजी को चांदी का वाधा वस्त्र, अलंकारो से युक्त दान के बाद श्रृंगार किया गया था । स्थायी देव की स्मृति बनी रहे । ऐसा दर्शन कराया गया । सात दिन तक यजमानश्री द्वारा पूजन तथा गौमाता के लिये हरि घास खिलाई गयी ।

समापन : लक्ष्मी फिलामेन्ट अहमदाबाद (मेथाणवाले) के यजमान पदे से मंदिर की ध्वजा फहराई गयी । श्री शिक्षापत्री जयंती के उपलक्ष्य में मंदिर के सभा मंडप में समूह वाचन तथा महोत्सव के जगह पूजा की गई थी । भारत के ७४ वे गणतंत्र दिन के अवसर पर देश भक्ति के गीतो के साथ भारत माता की जय बुलाकर, वंदे मातरम गीत के साथ राष्ट्रवंदना की गयी थी । आज के दिन ५६ वर्ष बाद प.पू. बड़े महाराजश्री सॉफा बांधकर सभा मंडप में आये थे । ७९ वर्ष के उम्र में मुखारविंद तेजस्वी होने के कारण राजाधिराज के रुप में सभी ने दर्शन किये थे ।

कथा मंडप के बाहर प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. श्रीराजा के करकमलो द्वारा तिरंगा लहरा कर धर्मकुल परिवार और संतो सहित राजकीय सामाजिक महानुभाव और उपस्थित सभी ने जन, गण मन ...... राष्ट्रीय गान के साथ ध्वजवंदन किये थे । वसंत का स्वागत करने के लिये दोपहर १२ बजे धर्मकुल के कर कमलो द्वारा परम्परागत रुप से वसंत पूजा आरती की गई थी । महोत्सव के खुले मैदान में सम्प्रदाय का सर्व प्रथम बार श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपा के करमकलो द्वारा श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के प्रसादी केसरिया और गुलाबी रंग से रंगकर बसंत को मनाया गया । स्वामिनारायण महामंत्र की धुन का गान संगीत साउन्ड के साथ रंगोत्सव एक घंटे तक दिव्य आनंद प्राप्त किये ।

भक्तिरस से परिपूर्ण प्रसादी के रंग में रंगकर सुखद यादो के साथ वापस लोग गये ।

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

महाप्रसाद

सन्मान

सन्मान

सन्मान

सन्मान

अभिषेक दर्शन

आशीर्वचन

मूली उत्सव श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के मुरव से आशीर्वाद वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

प.पू. बड़े महाराजश्री दि. २०-१-२०२३ : आदरणीय संतो और प्रिय सत्संगी भाईयो, हम कितनी वस्तु देख सकते है । कुछ वस्तुए देख नही सकते है । केवल मात्र अनुभव कर सकते है । उदा. वर्षा तथा बरफ का गिरना देख सकते है । और अनुभव भी कर सकते है । ठंडी और गर्मी देख नही सकते है । मात्र अनुभव कर सकते है । इसी प्रकार श्रद्धा, भावना और शक्ति अनुभव कर सकते है । लेकिन देख नही सकते है । लेकिन इस सभा मंडप में इस वस्तु को देख भी सकते है । महाराज जब मुक्तानंद स्वामी से मिले । और रामानंद स्वामी का दर्शन बाकी था । तब वह बोले थे कि एक बार रामानंद स्वामी का दर्शन हो जाये । इसके बाद हम दोनो जंगल में जाकर भजन, भक्ति और तपस्या करेगे । क्योंकि हमको महल और शहर अच्छे नही लगते है । वन-पर्वत आदि अच्छे लगते है । लेकिन जब महाराज की सत्संग पर द्रृष्टि हुई

सत्संगियो की भावना देखकर अपना विचार बदल दिये। और सत्संग के मध्य रहे। इस प्रकार हमने सर्व प्रथम यह विचार किया कि मूली ''उत्सव'' में प्रतिदिन जायेगे। दोपहर के पश्चात अहमदाबाद वापस आ जायेगे। इस तरह आते-जाते रहेगे। लेकिन आज यहाँ पर सबकी श्रद्धा भावना देखकर अपना विचार बदल दिये। कल से अपनी सामग्री लेकर आयेगे और यही पर निवास करेगे।

अभी लालजी महाराजश्री से बात किये। जैसा देश वैसा भेष यहाँ पर सभी लोगो को साफा बांधा देखकर, मुझे भी साफा बाँधने का मन कर रहा है। एक ही दिन बांधेगे। १३ वर्ष के थे। तब अफ्रिका जाने का अवसर मिला। उस समय पार्षद प्रतिदिन साफा बाँध देते थे। इस प्रकार मुझे कुछ दिन के बाद साफा बांधने आ गया। लालजी महाराजश्री से आज्ञा ले लिया है। एक दिन सभा मंडप में साफा बाँध कर आयेगे। स्वयं श्रीजी महाराज अमी दृष्टि रखकर तथा मंदिर के निर्माता ब्रह्मानंद स्वामी ये सभी प्रत्यक्ष रुप से उत्सव का आनंद लेते होगे। और विचरण करते होगे। पूरी सफलता के साथ इस उत्सव को मनाना है। यह माहौल देखकर अति आनंद हो रहा है। जितने उमंग से ब्रह्मानंद स्वामीने मंदिर का निर्माण किये है। जिस उत्साह से यहाँ पर सत्संग की स्थापना हुई है। रामाभाई राजा से दान प्राप्त किये है। इतने उत्साह और दिव्यता से सर्वोपरि ''उत्सव'' होना है। श्रीजी महाराज स्वयं दिव्य स्वरुप को विचार कर आशीर्वाद देता है।

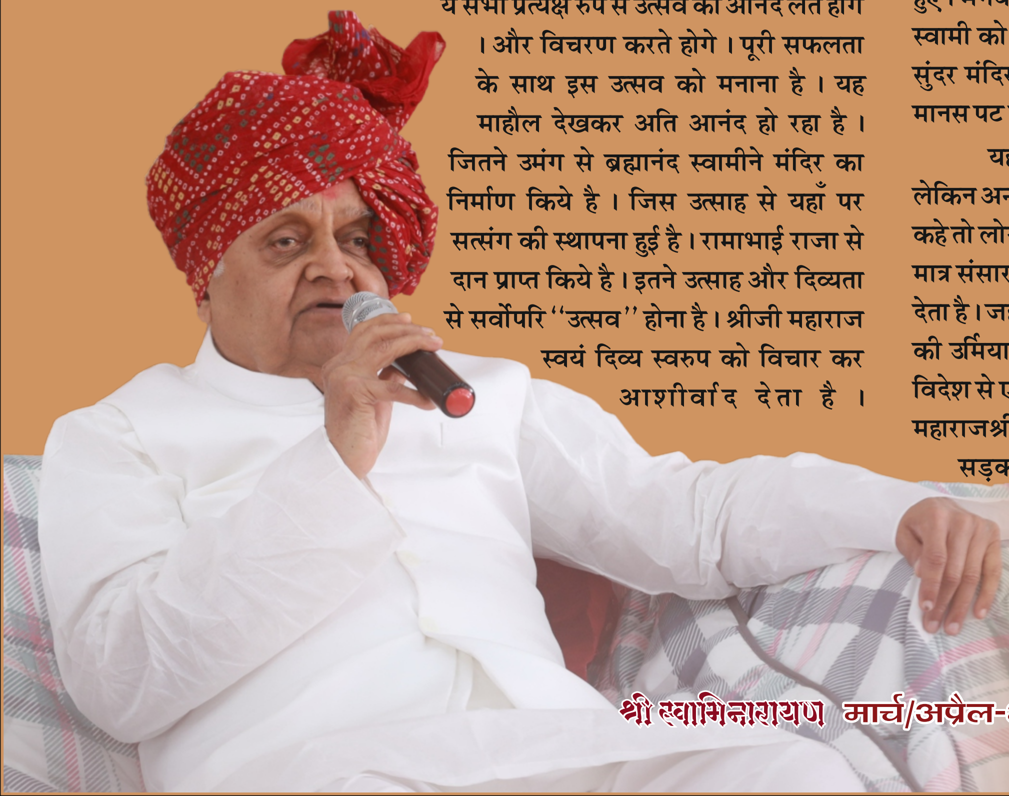

धन्यवाद और आर्शीवाद के साथ विराम दे रहा हूँ। जय स्वामिनारायण

दि. २५-१-२०२३ : स्वामीजी अचानक कहे है कि आप को कुछ बोलना है। हमने कुछ सोचा नही है।ऐसे उत्सव में वक्ता से अच्छा श्रोता बनना आवश्यक है। इन सभी प्रसंगो में मिलने का अवसर मिलता है।आज ठंडी अधिक पडी है। पहले दिन सोचे ये की सात दिन तक तम्बू में रहेगे। लेकिन पहले दिन ही इतनी ठंड पडी की हिम्मत टूट गयी। मैं अहमदाबाद वापस आ गया। महाराजने कहा कि उत्सव यह याद रहेगा। क्योकि सर्दी अधिक पडी थी। इससे मूली तथा यहा का उत्सव सदैव याद रहेगा। इस कारण से राधाकृष्णदेव की स्मृति आयेगी।

वचनामृत में महाराज कहे है कि भगवान का भक्त होना कठिन है। ऐसे भक्तो का मिलना भी कठिनहै। और महाराज कहते है कि ऐसे भक्तो का भक्त होना अच्छा लगता है। ऐसे कई भक्त हुए है। नरसिंह मेहता, मीराबाई अपने सम्प्रदाय में कई लोग हुए। भगवान के भाई बंधु हुए तो वह ब्रह्मानंद स्वामी भाई बंधु होने का गौरव ब्रह्मानंद स्वामी को ही मिला है। वही ब्रह्मानंद स्वामी यहाँ पर सत्संग की नींव रखे है। इतना सुंदर मंदिर बनाये। इस कारण से हम सब की जिम्मेदारी है कि ये स्मृतियाँ अपने मानस पट पर स्थायी अंकित रहे।

यहाँ के उत्सव में जैसा अनुशासन होना चाहिए वैसा दिखाई नही देता है। लेकिन अन्तर की उल्लास के साथ स्वैछिक अनुशासन है। भीड में धक्का मारने का मन कहे तो लोग धक्का मार देते है। कभी-कभी खिसका भी देते है। इस प्रकार का तरंगित मात्र संसार में अन्य कही पर नही दिखाई देता है। यह मात्र भगवान के धाम में दिखाई देता है। जहाँ पर भक्त एकत्र होते है। अनुशासन मुक्त कतार-पंक्ति नही लेकिन अन्तर की उर्मिया सुव्यवस्थित है। इसकी जडे अधिक गहरी है। यहाँ पर हम लोग देश-विदेश से एकत्र हुए है। वाली में एक अपना मंदिर है। इसकी प्रतिष्ठा वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री दादाने किया। उनका एक प्रसंग याद आ रहा है। उस समय साधन तथा सड़क यात्रायात की सुविधा का अभाव था। वासुदेवप्रसादजी ऊँट पर बैठकर प्रतिष्ठा करने गये। यह संप्रदाय का प्राचीन इतिहास है। सम्प्रदाय की उज्जवल और परम्परा और गरिमा है। जिसे हमे सुरक्षित रखना है। अहमदाबाद देश में जो परस्पर प्रेम है। उसका बंधन अद्वितीय है। इसके पीछे कोई योजना और संविधान नही है। यह सहज है। आचार्य, संतो

और हरिभक्तो मे आपस में समझदारी, एकता और प्रेम यह आगे की पीढी में बनी रहे। अहमदाबाद गद्दी की शोभा बनी रहे। यही आज के दिन प्रार्थना।

दि. २६-१-२०२३ : सुख के दिन जल्दी बीत जाते है। हम लोग उत्सव का रास्ता वर्षो से देख रहे थे। यह देखते-देखते श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से सर्वोपरी उत्सव मनाया गया। इस मंदिर का इतिहास देखे तो इसमें कई विशेषताये है। इस मंदिर के आर्किटेक्ट महाराजजी स्वयं थे। ब्रह्मानंद स्वामी को महाराज जी दर्शन देकर, लाईन खींच कर कहे कि यहाँ पर नींव रखो। खुदी नींव को महाराज ने बदलवाया था। मंदिर के लिये मैंटेरियल, सप्लायर महाराज ही है। महाराज ब्रह्मानंद स्वामी को दर्शन देकर पत्थर की खदान तक ले जाकर पत्थर पर तीन डंडे मारकर कहे कि। इस पत्थर का उपयोग करो। भरवाड का वेष धारण करके कुआ भी बताये थे। धर्मकुल मे से सुवासिनी दीदी ने अपना कडा देकर मंदिर को डोनेट की थी। महाराज ने मूर्ति दिया था।और प्रतिष्ठा भी किये थे। इस लिये यह मंदिर श्री नरनारायणदेव देश गद्दी में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

ब्रह्मानंद स्वामी जी भी महत्वपूर्ण प्रतिभा वाले है। रामानंद स्वामी धुमते-धुमते खाण गाँव में गये थे। और भगवान की महिमा का वर्णन कर रहे ते।उसी समय ब्रह्मानंद स्वामी माँ के पेट में से बोले कि स्वामी। साक्षात् की बात करे। रामानंद स्वामी बोले, प्रगट की बाते आप को बताना है। जो माँ के गर्भ में रहकर इस प्रकार का विश्वास हो। ऐसा संत कितना बडा होगा। उसकी कल्पना कर सकते है। ऐसे संत हम लोगो को मिल चुके है। और यही संत ने मंदिर का निर्माण करवाये थे।

हम लोगो को सभी प्रकार की भेट मिली है। इस लिये इस उत्सव में से कुछ ले जाना है। सफल व्यापारी अवसर देखता है। यह मौके का उपयोग कर लेता है। ये चकडोल वाले लारी गल्ला वाले, को आप देखे।(यहाँ के आस-पास मेला आनंद की नगरी बन गई थी। हमने किसी को आमंत्रण नही दिया था। फिर भी ये लोग मौका देखकर आ गये। छोटे-बडे व्यापारी बनाये। भीड का लाभ कई बार जेब कतरे भी उठाते है। कई वर्ष पहले ऐसे लोग विशेष साधन से मूली के उत्सव में आये थे। लेकिन सफल नही रहे। हमे कथा के माध्यम से कमाई करना है। अच्छी बात को जीवन में उतारना चाहिए। अपने जीवन मे सद्गुणो का विकास करे।

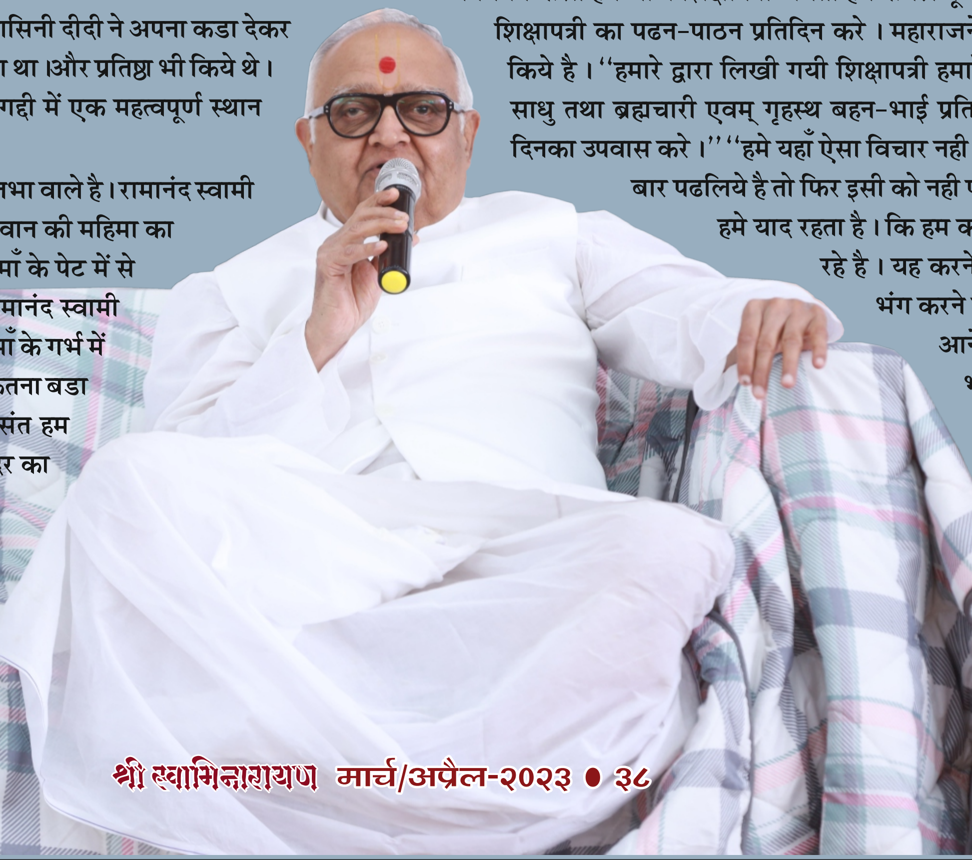

अंग्रेज महाराज से कहते थे। स्वामिनारायण हमारे पास सेना है। हम लोग मनुष्यो को नियम में नही रख पाते है। तो आप बगैर सैनिको के बिना अपने आश्रितो को नियम में रखते है ? महाराज उन्हे शिक्षापत्री देकर कहते है कि इसी के माध्यम से नियमन करते है। आज शिक्षापत्री जयंती है। केवल पूजा ही नही करे। बल्कि शिक्षापत्री का पढन-पाठन प्रतिदिन करे। महाराजने वचनामृत में आदेश किये है। "हमारे द्वारा लिखी गयी शिक्षापत्री हमारे आश्रित जो त्यागी, साधु तथा ब्रह्मचारी एवम् गृहस्थ बहन-भाई प्रतिदिन नही करे तो ऐसे दिनका उपवास करे।" "हमे यहाँ ऐसा विचार नही करना चाहिए कि एक बार पढलिये है तो फिर इसी को नही पढे ? लगातार पढने से हमे याद रहता है। कि हम कब आज्ञा को भंग कर रहे है। यह करने योग्य नही है। आज भंग करने पर दुख आता है। दुख आने पर पेज पढे। आज्ञा भंग करने पर दुख मिला है। शिक्षापत्री में महाराजने उत्तर लिखा है। सुख आने पर भी पेज खोलकर देखे की किस कारण से सुख आया है।

शिक्षापत्री द्वारा महाराज अपने साथ बात करते है । इस लिये यदि पूरा पढ नही सके तो प्रतिदिन पाँच श्लोक अवश्य पढे ।

लालजी महाराजश्री को इस अवसर धन्यवाद देता हूँ कि वे अध्यक्ष पद पर रह कर मार्गदर्शन दिये है । कई कार्य करना है । अभी इससे बड़ा उत्सव आपश्री के अध्यक्ष पद से होना है । महाराज जेतलपुर के वचनामृत में बताये है । यह पूर्ण हो तो सभा का कुछ हो । इस लिये आप सभी महाराजश्री से प्रार्थना करना कि इनके कार्यकाल में श्री नरनारायणदेव की गद्दी की प्रतिष्ठा और आगे बढे । अधिक यश और कीर्ति प्राप्त करे । संतो-भक्तो की स्नेह और देव के आशीर्वाद को प्राप्त करे । यहाँ के मधुर यादो के साथ जा रहे है । पुनः अप्रैल मास में भुज में एकत्र होना है । आप सभी याद रखियेगा । भुज और मूली ये दोनो मंदिर श्री नरनारयणदेव गद्दी के दाहिने और बाँये भुजा है । वहाँ पर भी प्रेम से उत्सव सम्पन्न करना है । सभी को धन्यवाद और आशीर्वाद शुभेच्छा के साथ विराम ले रहा हूँ । जय स्वामिनारायण ।

प.पू. लालजी महाराजश्री दि. २०-१-२०२३ : जिस समय की हम लोग पिछले एक वर्ष से राह देख रहे थे । उस उत्सव कि विज्ञापन और तैयारी हम सभी अपने नरनारायणदेव का २०० वर्ष का ''पर्व'' उत्सव समय से मनाये । हमे यहाँ पर कई बार आना हुआ । मैं यह देखता था । इस प्रांत के सभी हरिभक्त दिन रात एक करके सेवा दे रहे थे । राधाकृष्णदेव के प्रति आप सभी का समर्पण निष्ठा के लिये धन्यवाद देते है । निष्ठा नही होने पर यह उत्सव और समैया नही पूर्ण होता । आप के श्रम से ग्राम्य क्षेत्र में एक नगर बना दिये । यह देश-विदेश के लोग देख रहे है । स्वामिनारायण भगवानने नव मंदिर का निर्माण करवाये थे । इस मंदिर में बिराजमान महाप्रतापी श्री राधाकृष्णदेव हम लोगोको मिले है । तो उत्सव निर्विघ्न रुप से पुरा होगा । इसमें शंका नही है । क्योकि राधाकृष्णदेव हजरा-हजूर है ।

इस उत्सव के प्रति दिन पर इतनी संख्या में आकर आनंद उठा रहे है । शेष छः दिनो में गाँव विस्तार के हरिभक्त इस उत्सव में आये । आप सभी प्रेरित करे । क्योकि अपने जीवन में एक बार ही उत्सव आने वाला है । हम सभी भाग्यशाली है कि हम लोगो के जीवन काल में नरनारायणदेव का २०० वर्ष उत्सव के रुप में मिल रहा है । शेष अन्य दिनो का लाभ ले । सभी के जीवनमें राधाकृष्णदेव के प्रति निष्ठा और महिमा बढे । और उत्सव के माध्यम से सम्प्रदाय के प्रति प्रेम बढे । श्रीराधाकृष्णदेव के चरणो मे प्रार्थना है ।

दि. २६-१-२०२३ : वैसे तो आज उत्सव की पूर्णाहुति का दिन है । यहाँ पर २०० वर्ष का उत्सव वास्तव में पूर्ण नही होता है । मूली प्रदेश के समस्त हरिभक्तो के लिये उत्सव से एक नये युग की शुरुआत हो रही है । २५ वर्ष के पश्चात बड़ा समैया रखा गया । अहमदाबाद और मूली इन दोनो का २०० वर्ष का उत्सव हमने मनाया । तो अब एक जिम्मेदारी हो जाती है कि अपनी भविष्य की पीढी के बच्चे और बच्चियो है । ये लोग कैसे सत्संग मे जुडे रहे । इसके लिये हम सभी को प्रयास करना है । विशेषकर नवयुवको में कैसे संस्कार आये । कैसे भगवान को पहचाने तथा भगवान के साथ जुडे इस लिये छोटा-बड़ा उत्सव मूली मे करते रहना चाहिए। देश-विदेश से आये लोग अधिकतर सभा मंडप में दिखाई नही दे रहे थे । उससे अधिक बाहर

हरिभक्त दिखाई दे रहे थे। तीर्थो से संत लोग आये थे। सभी ने उत्सव का लाभ लिया। यह उत्सव उल्लास के साथ समापन की तरफ बढ रहा है। यह श्रेय राधाकृष्णदेव को जाता है। क्योकि यह उत्सव राधाकृष्णदेव का है। उनकी कृपा से उत्सव पूर्ण हुआ है। ऐसी निष्ठा और श्रद्धा राधाकृष्णदेव के लिये हम सब के हृदय में है। भक्ति-निष्ठा इसी तरह से बढती रहे। ऐसी महाराज के चरणो में वंदना करते है।

शहर में उत्सव मनाना सरल होता है। छोटी-बड़ी वस्तुए सहजता से प्राप्त हो जाती है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में बडा नगर बनाना कोई छोटी बात नही है। इस लिये भोजनालय मे, पार्कि में, टेन्ट की सेवा में मंदिर में अपने स्थान पर रहकर दिन-रात्रि सेवा दिये है। जिसने सभा मंडप देखा तक नही है। ऐसे प्रत्येक हरिभक्तो को संतो को साधुवाद। महाराज सबका शुभ करे। दिन प्रतिदिन देव के प्रति निष्ठा बढती रहे। ऐसी राधाकृष्णदेव के चरणो में प्रार्थना स्वीकार हो।

प.पू. महाराजश्री दि. २१-१-२०२३ : राधाकृष्णदेव की उच्च स्वर में जय बुलाकर प.पू. महाराजश्री बोले, राधाकृष्णदेव के प्रांगण में अपना द्वितीय मंदिर महाराजने देव की प्रतिष्ठा किये है उसका उत्सव, जिसका नाम ही उत्सव है। आगे पीछे जोडने की कोई आवश्यकता ही नही है। उत्सव शब्द ही पूर्ण है। उत्सव बहुत कुछ बताता है। भगवान का उत्सव, भगवान के परख का उत्सव, सत्संग की तरफ अग्रसर होने का उत्सव, हमारे पीछे उत्सव का लोगो दिख रहा है। लोगो बनाने के पीछे लोग पड गये। यह लोगो आज सार्थक हुआ है।

देव स्वामी कहे, इतिहास बताये Mythology (पुराण कथा) या दंत कथा नही बता रहे है। महाराज मूली मे मंदिर बनाने के लिये। ब्रह्मानंद स्वामी को आदेश दिये। स्वामीजी इस बात से उदास हो गये। इसमें कुछ नही है। झालावाड शुष्क क्षेत्र है। तभी सुवासिनी बाने अपने पैर से कडा निकालकर ब्रह्मानंद स्वामी को दे दिये। यह बात भूलना नही चाहिए की उसका वजन बहुत था। कडा प्राप्त होने के बाद ब्रह्मानंद स्वामी को विश्वास हो गया कि यहाँ पर मूली के मंदिर में शिखर ध्वज लहरायेगा। यह एक इतिहास है। कोई ब्रान्ड Equity (विशेष पहचान चित्र) होता है। उसके पीछे उसका सार होता है। भावार्थ meaning होती है। and correct may if I may wrong, hurry, this always a meaning महाराजजीने कहा हि सुवासिनी बहन में जो कडा दी है। और हमारा ध्यान रखी। हम उनके कभी कृत्घन नही हो सकते है। हमे कुछ प्राप्त होगा। पुत्र को दे देगे।

धर्मकुल का स्वागत किये। लोया में जब धर्मकुल आया था। तब महाराज शाकोत्सव में शाक मे बधार लगाते थे। उस समय की मूर्ति कौन थी ? जिसका आप सभी दर्शन कर रहे है। वह मात्र राधाकृष्णदेव दी मूर्ति थी। हरिकृष्ण महाराज बाद में पधराये थे। महाराज अर्न्तध्यान हो गये थे। इतिहास पता है। कुछ लोग लेकर चल पडे है। वास्तविक्ता ये है। बिना इतिहास जो जाने फेकना नही चाहिए।

महाराजने लोया में सूरा खाचर से पूछे कि पूरे गाँव को आनंद करवाना है। उत्सव करना है। सूरा खाचर तब बोले। यहाँ पर केवल बैगन मिलता है। महाराजने कहा कोई बात नही। हम शाकोत्सव करेगे। शाकोत्सव कही पर होता हो लेकिन वह मूर्ति हम लोगो के पास ही है। इस मूर्ति की सेवा महाराजने दो महीने तक स्वयं किये थे

। थाल चढाना, आरती करना अपने हाथ से सेवा देते थे । अपने हाथो से मूर्ति पधाराये । इस इतिहास का ज्ञान रखना आवश्यक है । जानना जरुरी है कि नही ? झालावाड में जो आज हरियाली दिखाई दे रही है । इसके कारण दो का आभार है । एक सुवासिनी भाभी के पैर के कडे को निकाल कर देना (ब्रह्मानंद स्वामी को) दुसरी यह राधाकृष्णदेव की मूर्ति भगवान मे भेद नही है । भेद तो हमारे हृदय में है । यह हमेशा हम बोलेगे हमे देव का बनकर रहना है । किसी और का नही बनना है । नहि तो लौह चुम्बक की तरह चीटर लोग मिलेगे । देव के प्रति अभिमान रखे ।

ऋषिमुनि भगवानके महिमा का गुणगान करते करते अन्नत, नेति-नेति कहकर छोड दिये है । उसी प्रकार हम लोगो का भी भाग्य नेति-नेति की तरह है । हम लोगो को कुंडली देव के साथ जुडी है । झालावाड को राधाकृष्णदेव की भेट महाराज ने स्वयं दिया है । आप लोग इस पर स्वाभिमान करे । सभा में बैठकर जो बोलना था वह कह दिये है । क्या ये देव बाजार में मिलते है । पैसा से मिलते है ? मुझे बताये ? यदि पैसे से मिलते तो लोग तिजोरी मे रखते । ये देव श्रद्धा से मिलते है । प्रत्यक्ष है । माँगना नही है । भगवान को दाणिया ती तरह नही रखना है । भगवान को भजो, स्वयं को देखो फिर देवो आनंद का असीम प्राप्ति होगी ।

बीच में जब आये थे । तब यहाँ निर्माण कार्य चल रहा था । रसोई बन रही थी । चुल्हे बन रहे थे । सभी हरि भक्तो से जाकर मिले थे। क्योकि छोटा-बडा कोई नही है । यह बनाने मे जिसने सहयोग किया है । उत्सव का आनंद उठाये । भगवान जैसे भगवान मिले है । इसका स्वाभिमान सदैव बनाये रखे । दूसरी भीड में जाकर कभी भूल भी सकते है । इस लिये शिक्षापत्री का नित्य पाठ करे । सभी को ज्ञात है कि शिक्षापत्री मे क्या आता है । नित्य पाठ करने से भूल गया तथ्य पुनः समझ में आ जाता है । इसलिये महत्वपूर्ण है । पाँच श्लोक प्रतिदिन पढे । मुझे ज्ञात नही है कि महाराज गणित के शिक्षक थे कि नही ? महाराज प्लस माइनस की गणना नही करते है । वास्तव ये एक बार भगवान को अन्तंमन से याद करने पर आत्मप्रकाश जागृत हो जाता है ।

जो करना है वही करे । जो नही करना है । उसे किस लिये करे ? २१२ श्लोक क्या हमें कम मिले है । कुछ लोग इससे अधिक करते है । महाराजनेक हा है कि इस बार हमने कुछ छोडा ही नही है । महाराज के इस बात का वजन है या नही । या तो हम लोग मूर्ख है या महाराज जी मूर्ख थे । दो मे एक हो सकती है । २१२ श्लोक का पालन करने पर महाराज प्रत्यक्ष लिफ्टलेकर आते है । यह तो एक अलग है । महत्व की बात यह हा कै उत्सव को मनाये । तथा घर की तरह रहे । तीर्थ यात्रा करने पर अपने जेब का खर्च आता है । यहाँ पर लड्डु मिलना है । तो भी कई लोग बिमार रहते है । यह बिमारी दिमागी है । उत्सव में घर के मालिक बन कर आये । मेहमान बन कर आने की आवश्यकता नही है । अपने पिता सिंहासन पर बिराजमान है । हम उन्हे के बच्चे है । यह परिवार ही है । परिवार में शिकायत की जाती है जाने दे । इस बात पर ध्यान नही दे । आप सभी हमारे परिवार के है । इस लिये यह सुविधा प्रदान की गयी है । इस क्षेत्र में इतनी अच्छी सुविधा दी है । भगवान आप के साथ है । और रहेगे । आप सभी को प्रभु का आशीर्वाद मिले ।

दि. २३-१-२०२३ : आशीर्वाद सिंहासन पर बैठने वाले दे रहे है । जो भगवान दे रहे है । हम लोग प्रार्थना करते है । आशीर्वाद के लंगर में जो जुड गया

है। यह तो ऐसा बनता है। ऐसा आशीर्वाद देने वाले सप्ताह मे १२ लोग बन जाते है। और वही पर भीड होती है। प्रेक्षक मिल ही जाते है।

हरिप्रसाद चौरसिया वृन्दावन गुरुकुल में है। वहाँ पर बासुरी वादन करते है। अच्छी बासुरी बजाते है। मैनखरुज था तान था... जिसे संगीत का ज्ञान है वही समझ सकता है। पंडित जसराजजी एक बार घर पर आये थे। जिसका सुर में दिमाग नही चलता है ।उसे असुर कहते है। अपने ब्रह्मानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी आदि संतोने जो भजन गाये है वह संगीत परम्परा आज भी चालू है। हमारी दृष्टि बदल गयी है। अब पहले जैसा नही रहा ! स्वामीजी बोले चकरडा किये थे। यह गोबर मे हाथ डालने वाली बात है। यह झालावाड प्रांत है। समझदार ही समझदार ही समझ सकते है। देव का बनकर रहने पर सब कुछ काम बना जाता है। देव के होने के कारण मै खडा हो गया। किसी और का प्रभाव होने पर न तो मे खडा रहुगा नही खडा रहने दूँगा। गूँदना शरीर में गुदा रहे है। कही पर भी देव की निंदा हो तो बुद्धि खराब हो जाती है। कल ही एक हरिभक्त आये थे। और बोले आप ऐसा कर सकते थे। वैसा कर सकते थे। कौये का बैठना और डाल का टूटना ऐसा है। यह तो मैं भी कर सकता हूँ। हम देव के अलावा कोई बात नही करते है। देव की विशेषता है। राधाकृष्णदेव की महिमा है। यह महिमा हृदय से नाभि तक आने पर ही कल्याण होगा। न्यौता देने से वह नही समझे की आप सत्संगी है। यह तो परोक्षवाले है। ऐसा ? आप को सुप्रीम कोर्ट का जज बनाये। माहिल लोग जानते है। सिंहासन पर बैठा जानता है। हमारे हृदय मे क्या है ? किसी का प्रमाणपत्र हमे नही चाहिए। भगवान का प्रमाणपत्र हमे चाहिए। भगवान की कृपा से सब कुछ हो सकता है। यह कृपा धन से नही मिलती है।

महाराज के द्वारा स्थापित परम्परा और सिद्धान्त पूर्वजो के पास से मिलता है। यह आगे बढते रहना है। बच्चे-बच्चियो को समझाना नही पड रहा है। तो समझ ले कि भगवान खुश है। यह साधारण बात है। कुछ बच्चो के अंदर गुण होता है। लेकिन उन्हे माहौल देना पडता है।

२१२ श्लोक में चोटली की बात नही आती है। महाराज भूल गये ? क्योकि इस बात का समन्बध नही हो पाता है। महाराज बोले है कि इस बार किसी बात की शिकायत नही है। २१२ श्लोक में लिखा है।

सच्छास्त्राणां समुदधृत्य सर्वेषा सारमात्मना ।
पत्रीयं लिखितां नृणामभीष्ट फलदायिनी ।।

संस्कृत कठिन नही है। यह शिक्षापत्री हमने लिखा है। यह सभी मनुष्य को मनवांछित फल देने वाली है। जो शिक्षापत्री के हिसाब से जीवन जीये या न जीये। तो कोई बात नही है। भगवान नही बोले कि कहाँ से लाये है ? आज संसार में २१२ से २१३ कोई किया ? सब कुछ सत्य है। तथा सत्य ही रहने वाला है। यह देश विभाग का लेख है। यह सम्प्रदाय का संविधान है। यह पर्व में सभी को दिया गया है। आज आवश्यकता है। तो ले जाये। शिक्षापत्री महाराज स्वयं लिखे है। सत्संगी जीवन शास्त्र है। इसमे चोटी का वर्णन नही आता है। समझ न आये तो आठ सत्शास्त्र का सन्दर्भ ले। याज्ञवल्क्य स्मृति पढ कर माँसाहार प्रारम्भ कर देगे। सूचना नही है तो अच्छा है। अपनी नही तो गलती होगी। भगवान जो कहे है। इतना ही करना है। इतना ही करे। तो अधिक है।

संगीत की बात थी। जसराजजी आये थे। तभी बापजीने प्रश्न किया था कि शास्त्रीय संगीत की जितनी प्रगति होनी चाहिए। उतनी नही हो सकी है। भूतकाल की बात कर रहा हूँ। अभी तो उनका स्वर्ग वास हो चुका है। लेकिन उनसे मुलाकात कई बार हो चुकी है। हमारे प्रति उनका अधिक स्नेह था। प्रभु.... यह सुरक्षित रखे है। शास्त्रीय संगीत की परम्परा सुरक्षित रखे है। यह बडी बात है। जमीन पर बैठकर तानपुरा और तबले को सेट कराते थे। मै भी नीचे बैठा रहता था। उस समय लालजी महाराज के रुप में था। बगल से पेंडा का प्रसाद लेकर बोले लो माताजी का प्रसाद ग्रहण करो। मै प्रणाम करके प्रसाद ग्रहण कर लेता था। यहाँ पर लोग माताजी के प्रसाद के ग्रहण करना नही चाह रहे है। विभाजन कर दिये है। सिंहासन पर बैठने वाले को कोई समस्या नही है। समस्या सभी को ही है। पाटिया लगा देते है। भाई शक्ति के स्वरुप है। अपने मंदिर में राधिकाजी, लक्ष्मीजी, पार्वतीजी के रुप मे है। किस रुप में आप दर्शन करेगे ? यह सब मनुष्य ही करता है। इस तरह (आंख बंद करके) दर्शन करते है। वे लोग समाज में रहने लायक नही है। इसमें भगवान का आश्चर्य दिखाई देता है। देव के दर्शन मे यदि विकार आये तो यह भावना अच्छी नही है। उस समाज में खुला नही छोड सकते है। यह सत्य है कि नही ? यह सत्य है कि नही ? ऐसी भी प्रजाति भी है।

गरासिया राजपूतो मे अफीम खाने की आदत अधिक थी । यहाँ पर महाराजने रोकने का प्रयास किये थे। अभी तो जर्जरित हो गई है । इसे पुन: जीवित करना है । यह खुशी की बात है । प्रतिपाप्त की बात नही है । इतिहास है । हम बोलते है । लोलम लोल नही करे । गोबर में हाथ मत डाले । शीद ने भटको ही मत पंथ माँ ? लोल.... नंद संतो के मुख से ऐसी वाणी निकली है । लिखे नही यह बोले है । महाराज की मूर्ति के सामने बैठकर दर्शन करके खुश रहे।

बात शास्त्रीय संगीत की थी । कल उठकर कोई विस्तार कर सकते है । कम हो गया तो क्या है ? विस्तार से अच्छा सुरक्षित रखना है । अपनी बुद्दि को बढाना नही है । भगवान से बुद्धि का विकास करे । बच्चो का लगाव प्रभु मे हो । उसे प्रोत्साहित करें । शेष बात बाद में करेगे । सहजानंद स्वामी महाराज की जय.....

दि. २४-१-२०२३ : बड़े बापजी के आज्ञा से और लालजी महाराजश्री ने साथ में रखकर, मार्गदर्शन लेकर, मूली मंदिर का मास्टर प्लान, मात्र यह संतो का विश्राम स्थल नही है । यहाँ पर सब प्लान बनाया जा रहा है । यह प्रोग्रेस मे है । महाराजने झालावाड का केन्द्र बिन्दु बना रखे थे । ६०% लगभग तैयार हो गया है । जब पूरा हो जायेगा तो गाँव-गाँव से संत लोग आयेगे । किसी के साथ जबरन नही करना है । हमारे भगवान बलवान है । राधाकृष्णदेव महाराजने स्वयं झालावाड को दिये है । इस लिये कंगालियत नही है । ज्ञान सभी को है । छोटे से छोटा हरिभक्त कहा जाता है । यह मै नही कहता हूँ । लाख से हजार दान करते है । १०० मे ५० दान करे तो बडी बात है । अनुपात होना चाहिए । जिन लोगो की आजिविका गाँव में ही समाहित है । घर की चारपाई बदलने मे दस बार सोचते है । लेकिन मंदिर के कार्य के लिये विचार नही करते है । महाराज कहे है । कि अपनी क्षमतानुसार दान दे । शक्ति को छिपाकर कर्ज लेकर नही करे । यह झालावाड के मध्य राधाकृष्णदेव बिराजमान है । पैसा मुझे चाहिए । ऐसी बात नही है । महाराजने जो मंदिर बनाये है । वह इसी तरह बनाये थे । लोग समय भी देते थे । हरिभक्तो का उत्साह भी है । उमंग है । विज्ञापन करने के लिये कहते थे । इस लिये यह बात मैने किया । विरोध वह है ही नही । यह महानुभाव बैठे है । ये तो स्टेज पर सभा जाये इतने ही लोग है । यदि इच्छा करे तो एक मनुष्य से पूरा हो आयेगा । लेकिन हमे ऐसा नही करना है । किसी के उपर आरोप नही लगा सकते है । खेत में सिंचाई करने वाला किसान हरिभक्त की ईच्छा भी होती है । कि उसे भी लाभ मिले देव की सेवा मे मेरा भी सहयोग है । ऐसी सोच बनाकर हम सभी कार्य करते है । अर्थात् थोडे समय में संत लोग बतायेगे । क्योकि सब कुछ हो रहा है । अपना-अपना तो सभी लोग करते है । लेकिन देव का कौन करेगा ? हमे देव का करना है । देव का ही करना है । ये हमारे नरनारायणदेव है । इस राधाकृष्णदेव को पधराये है । इनका मान रखकर जीवन व्यतीत करना है । आप सभी इसी मान से सहयोग कर रहे है । यह समाचार तो मैं लेता रहता हूँ ।

एकाउन्ट की कापी सप्ताह के बाद थर्ड पार्टी आडिट के लिये । नरनारायणदेव अहमदाबाद के मुख्यालय मे है । वहाँ पर सभी कागज बाउचर के द्वारा ट्रान्सफर हो जायेगा । १५ दिन के बाद ये आडिट रिपोर्ट सभी को प्राप्त हो जायेगी । इस लिये हरिप्रकाश स्वामी, एकाउन्ट विभाग में जो कुछ है आप बता देना । चोपडा रख ले । आगे पीछे हो आये तो यह अच्छी बात नही है । यह पैसा हरिभक्तो के पसीने का नही बल्कि यह उनके रक्त से बना है । एक-एक रुपया या आना मुफ्त मे नही आता है । इसके लिये हम सभी जिम्मेदार है । इसकी शुद्धता तथा इमानदारी से जाँच होगी । हमने सभी कहा हभी है । साध ही साथ एडवाईजरी समिति भी है । कोई ट्रस्टी नही है । पूर्ण ट्रस्टी उस समय का आचार्य होता है । वही सोल ट्रस्टी होता है । हमारी जिम्मेदारी इतनी ही है कि पानी कहाँ उपयोग करे

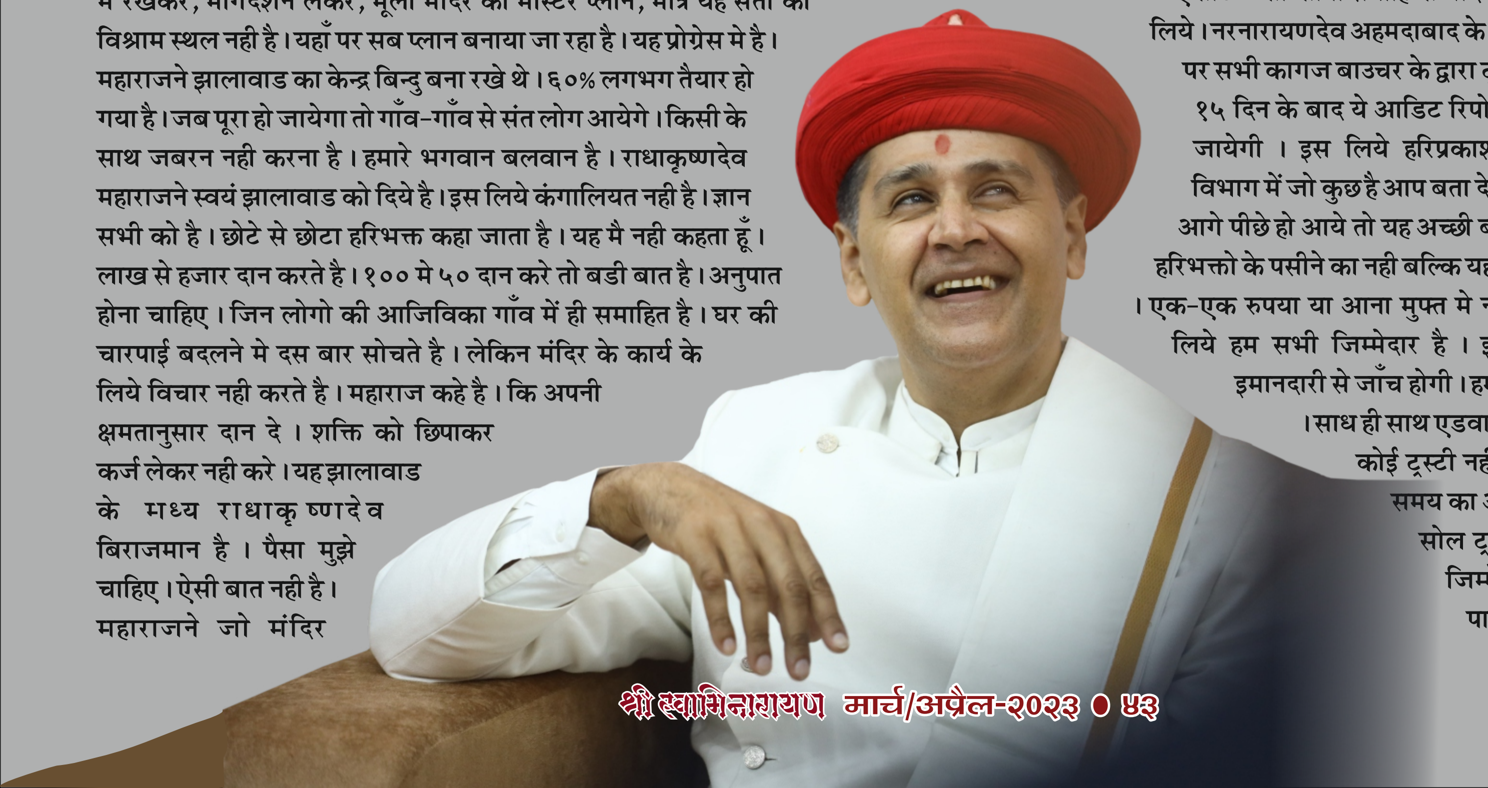

। जहाँ पर हरियाली है। वहाँ से लेकर शुष्क क्षेत्र में प्रवाहित करे । उसे हरा-भरा बनाना है।

हमारी कमेटी की मीटींग अधिक पारदर्शक होती है । मीटींग पाँच मिनट में पूर्ण हो जाती है। हम लोग तो माध्यम है। शेष देव शक्तिवान - सामर्थ्यवान है।

दि. २६-१-२०२३ : सर्व प्रथम पीछे तपस्या करते हमारे हरिभक्त सभी तो एक साथ जय स्वामिनारायण पीछे वाले को कोई देखता नही । आगे शीध्र सीट मिल जाती है । लेकिन जो पीछे खडे है उनके तप से हम लोग माला बज रहे है । इन्ही लोगो के पुण्य-प्रताप से हम लोग सुखी है । यह सनातन सत्य है । मुक्तानदं स्वामी कहते थे कि सभी नंद संत बैठा नही रहते थे । मंदिर के लिये निर्माण में उपयोगी पदार्थ लाते है। एक हरिभक्त आये । और बोले हमारे बच्चे को आशीर्वाद दे । स्वामी बोले भगवान इसका भला करे । भगतजी बोले ऐसा नही से । बच्चे के सिंर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दे । स्वामीजी बोले, ऐसे तो मै पूरा बैट जाउ तो भी इसका भला नही होगा । देव का आशीर्वाद प्राप्त करे । देव का बनकर रहे। किसी और का बनना नही है।

शिक्षापत्री के २१२ श्लोक है। महाराज कहे है कि भद्रपमिति मध्याणी ये जो हमारी वाणी है। यही हमारा स्वरुप है। आप खंडित स्वरुप का पूजन करते है ? बताये। पंडित शास्त्र की पूजा नही की जाती है। यह विचार करने वाली बात है। हमारे हिसाब से शास्त्र नही चलता है । सबसे पहले देश विभाग का लेख, इसके बाद शिक्षापत्री सत्संगी जीवन, सत्संगिभूषण ये अपने प्रधान शास्त्र है। नंद संतो की बात में अलंकार आते है। मुख्य शास्त्र के ज्ञान के बिना सब कुछ अधूरा है। यह सत्य बात है। जो सच्ची सेवा करता है । मुझे ज्ञात है । हरिप्रकाश स्वामी आपके गांव का नाम याद किये । इस गाँव में संत जाने से डरते थे । गढिया वचनामृत लेकर पर्दाफास कर देते थे । दो प्रश्न पूछते थे । उत्तर नही मिलने पर दशा क्या करे । प्रश्न करना कठिन था । २७३ वचनामृत में आप देखे । महाराज साधुओ के मध्य जाकर अर्ध रात्रि को संतो को जगाये थे। हरि भक्तो का एकत्र किये है। और कहे कि प्रश्न पूछे। आज आप मे शक्ति है कि प्रश्न पूछे ? और पूछना भी चाहिए । जब तक जिज्ञासावृति पूर्ण वहाँ पूर्ण समझ नही आये, तब तक भगवान की महिमा कैसे समझेगे ? गडबडमाला नही चलना चाहिए।

हम पाँच लोगो को एकत्र करके कहे कि हमारा गुणगान करो । भीड एकत्र करके हम भी भगवान बन जाये । महाराज स्वयं कहे है कि एक माने दो माने ऐसे संख्या बढ जाये तो लोग अपने को भगवान समझने लगते है। वर्तमान समय में ऐसी घटना सर्जित हो रही है। अवसर का लाभ उठाने के लिये जेबकतरे भी आते है। इसे इन्हे पहचाने । वास्तव में एक भगवान को परखे शेष आप को ज्ञान हो जायेगा । आज हम जहाँ पर बैटे है। कल शायद नही बैठू । यह सनातन सत्य कह रहा हूँ। सत्य है कि नही ? आप इस मंदिर के सभा मंडप में बैठे है। आप परम्परापात जो फोटो देख रहे है। वे तभी यहाँ पर बैठे है । इस लाल पगडी की महिमा है । और गरिमा रहेगी । नरनारायणदेव देश में यह पगडी देने नही निकले है। ये देव के लिये हो रहा है। मेरे बल से नही हो रहा है।

हरिभक्तोने अच्छी सेवा प्रदान किये है। संत तथा सांख्ययोगी बहनो की संख्या अधिक है । यहाँ पर जो लोग खडे हैं ये सभी तपस्वी, ऋषिमुनि ही है । खडे.....खडे तपस्या कर रहे है। क्या लगा है यहाँ ? यहाँ क्या मिल रहा है ? बूँदी भी नही मिल रही है। लड्डू भी नही मिलता है। तो भी खडे है ? भगवान मिले है इस लिये लोग यहाँ पर खडे है । भगवान के सहारे जीवन जीये । शेष नाटक तो चलता रहेगा ।

आज शिक्षापत्री जयंती है। ब्रह्मानंद स्वामी का जन्म दिन है। और वसंत का आगमन । ये तीन संयोग एक साथ आये है। स्थायी भी है। इससे पहले हम कहे है कि एक कवि गाये है। मेरी ऐसी चुनरिया रंग दे कि दूजा रंग न लगे । कुछ लोग इस रंग से भागते है। एक बूंद लगने से डरते है। अंदर कितनी बूँद मिली किसी को ज्ञात नही है। अंदर तो धब्बा ही धब्बा है । यह तो उत्सव का रंग है । भगवान के प्रसाद का रंग है। राधाकृष्णदेव के प्रसादी का रंग देना है। इससे रंग में रंग जायेगे । ऐसा मन होता है।

बीच में दो दिन पहले सरकार में गये थे। गुजरात प्रदेश में मुली मे एक अपना मंदिर दूसरा मांडवावजी का मंदिर ये दोनो स्थल टूरिस्ट डिपार्टमेन्ट आफ इन्डियामे सामिल किया है । यह बडी बात है । अब चार लेन वाली सडक बनाने की जिम्मेदारी उनकी है । इससे छुटकारा नही है । जन्म स्थान छपैयायात्राधाम विकास बोर्ड में नही रखा गया । यह टूरिझम में है । यदि यात्राधाम बोर्ड में चला जायेगा तो एक भी पत्थर हटाने के लिये सरकार से स्वीकृति लेनी पडेगी । मूली के लिये सरकार से बात हुई है।

फालोअप मैं करुगा । यह हमे देखना है । राज्य के बाद केन्द्र की तरफ जायेगे । कृपा होने पर भी कंगाल इतना मिलने के बाद हम बीमार रहते है ? ये देव मिले है । इससे बड़ी कोई वस्तु नही है । उत्सव होने के कारण इस बात को हमने बताया है । बच्चो मे संस्कार बना रहे । यह हम सभी को देखना है ।

उत्सव में जो लोग ठंडक सहे है । ठंडे पानी से स्नान किये है । आनंद इसी का है । याद तभी रहता है । गद्दा-तकिया रजाई याद नहीं रहती है । मै भी तंबू में रहा था । सात दिन ठंडे पानी से स्नान किया था । आप ये नहि समझे कि हम अच्छी सुविधा में रहे थे। साथ होते तो ज्ञात होता । यहाँ पर गवाह बैटे है । झालावाड की भाषा में कहे तो आनंद आ गया है । आज पीढी इस शब्द से अनभिज्ञ होता जा रहा है । तपस्या के विना भगवान खुश नही होते है ।

छोटे से छोटे हरिभक्त ने अपने समय का दान दिये है । अपना धन दिये दै । मुझे याद है । दो दिन पहेले एक बच्चा अपनी बचत का उत्सव में दान दिये थे । इनका लालन-पालन धन्य है । जो इनको ऐसा संस्कार दिये है । विचार का सम्पूर्ण न्याय यही है ।

अभी लालजी महाराजश्रीने कहा कि २०० वर्ष का यह उत्सव नये युग का प्रारम्भ है । हम दोनो संत सलाह दे रहे है कि गाँव-गाँव में भ्रमण करना शुरु कर दे । कमरा बाद में बनेगा । सभी को भगवान की कृपा है । यह कृपा नही मिले तो मनुष्य कहाँ जायेगा ? फिर ईधर-उधर चक्कर लगायेगा । यह दोष अपना ही है । स्वीकार करना सिखना चाहिए । मंदिर के स्तम्भ को पकडकर नही बैठना है । स्तम्भ २०० वर्ष से पडा है कही गिर नही जाये । गाँव को सुरक्षित रखना है । गाँव का हम पक्षघर है । मूली प्रांत में ३८० गाँव है । प्रत्येक घर में मै गया हूँ । अभी जांउगा भी झालावाड को ऐसे नही छोड देना है । उत्सव पूर्ण हुआ । अर्थात् बात समाप्त हुई । अभी प्रारम्भ हुआ है । भगवान राधाकृष्णदेव की खुमारी रखे । ईघर-उधर भटके नही तथा गंदकी में हाथनही डाले । समझदार व्यक्ति समझ गये होगे । नही समझे तो कोई बात नही । आप की भाषा मैं बात किया है । तो भी ५०% आदमी समझ गये होगे ।

धर्मादा देव के अलावा कही नही जाना चाहिए । **Finish !** धर्मादा का एकदाना भी बाहर गया तो उसका मोक्ष नही होने वाला है । मुक्ति नही होगी । यह बात सत्य है । लिखकर दे रहा हूँ । धर्मादा का प्रबन्धन दुःखी करेगा । पुनः हमारी जिम्मेदारी नही होगी । धर्मादा देव का होता है । शिक्षापत्री में धर्मादा देव को अर्पित करने को कहा गया है । धर्मादा में **Manipulation** नही करे । ऐसा करने से व्यक्ति का मन क्षरित होता है । मन नही बदले । धर्मादा का एक रुपया हो या एक अन्न का दाना हो । वह धर्मादा का माना जाता है । देव के अलावा कही नही जाना चाहिए । तो वह भगवान का सच्चा भक्त है । शेष तो माहिल है । आनंद करो, लड्डू खाये मर्यादा में रहे । अब राधाकृष्णदेव के प्रसादी के रंग उडाने चलते है । सभी का सपरिवार भला हो । ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में वंदना है ।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

BANK DETAILS FOR ONLINE / CHEQUE DONATION PURPOSE

STATE BANK OF INDIA
NAVRANGPURA BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME -
SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 62303101798
IFSC : SBIN0003096
MICR CODE : 380 002 029

INDIAN BANK
G S HIGH WAY BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME -
SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 50379847476
IFSC : IDIB000G523
MICR CODE : 380 019 038

BANK OF INDIA
RELIEF ROAD BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME -
SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 201310100027259
IFSC : BKID0002013
MICR CODE : 380 013 027

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

From-IV (see Rule : 8)

१.	प्रकाशक	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव गादी के अधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१

मैं शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य है।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,

॥श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम्॥

श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज आयोजीत

श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी महोत्सव-भुज

૧૮ એપ્રિલ ૨૦૨૩, ચૈત્ર વદ ૧૩, મંગળવાર થી ૨૬ એપ્રિલ ૨૦૨૩ વૈશાખ સુદ ૬, બુધવાર

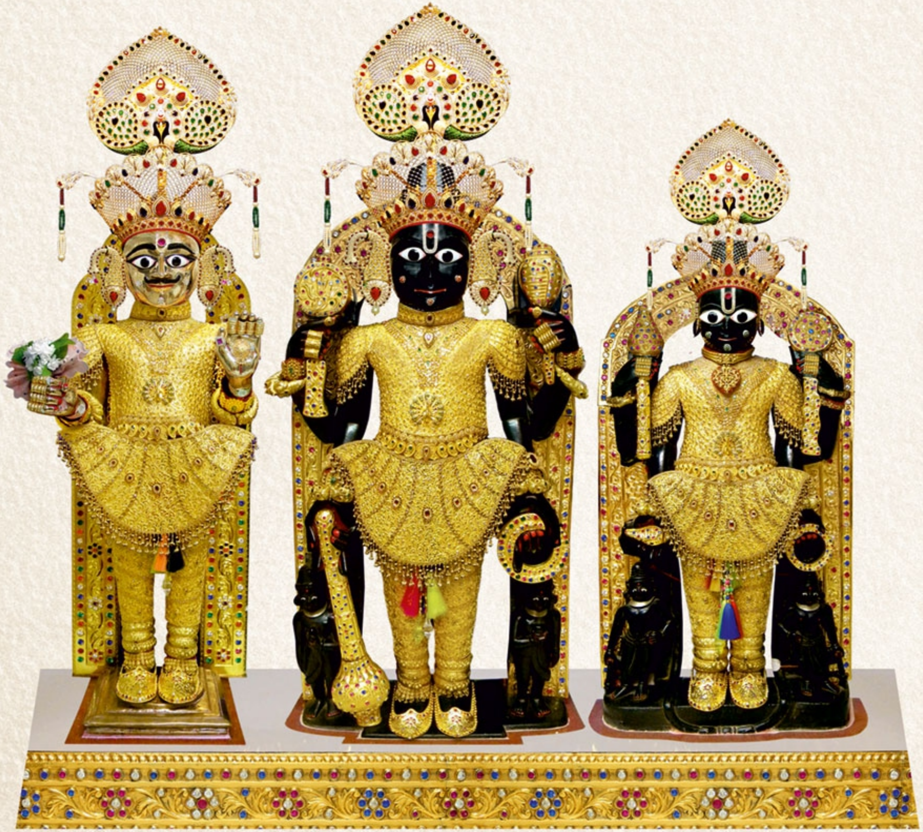

આમંત્રણ પત્રિકા

અનંતકોટિ બ્રહ્માંડના અધિપતિ
અહૈતુકી દયા કરનારા
અનંતકલ્યાણકારી ગુણોના સાગર
એટલે આપણા આરાધ્ય ઈષ્ટદેવ
શ્રીનરનારાયણદેવ.
આવા દેવનો દ્વિશતાબ્દી મહોત્સવ
એટલે આપણો મહોત્સવ

મહોત્સવ સ્થળ : ''બદ્રિકાશ્રમ'' શ્રી સ્વામિનારાયણ કન્યા વિદ્યામંદિર, મિરઝાપર રોડ, ભુજ - કચ્છ.

।। श्रीनरनारायणदेव पाहि माम् ।।

સ્વસ્તિ શ્રી....................................... મધ્યે મહાશુભસ્થાને, પરમ પવિત્ર શ્રીસહજાનંદસ્વામીના પરમ ઉપાસક એવં શ્રીજીમહારાજ કૃત ધર્મ, મર્યાદા પાલન તત્પર, સ્વધર્મ, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય તથા ભક્તિ આદિ ગુણ સંપન્ન, દેવ, આચાર્ય, સંત, સત્સંગ, સેવા પરાયણ, શ્રીજીમહારાજના પરમ લાડીલા સત્સંગ શિરોમણી પ.ભ... પ્રત્યે

અત્રે શ્રીનરનારાયણદેવના ચરણકમળ સાન્નિધ્ય શુભસ્થાન શ્રી ભુજનગરથી તમોને હરહંમેશ યાદ કરનારા લી. મહંત સદ્‌ગુરુ સ્વામી ધર્મનંદનદાસજી, ઉપમહંત સ.ગુ.પુ. સ્વામી ભગવદ્‌જીવનદાસજી, કોઠારી પાર્ષદ જાદવજી ભગત, સ.ગુ. સ્વામી સનાતનદાસજી, સ.ગુ. સ્વામી પ્રભુચરણદાસજી, સ.ગુ. સ્વામી નિરન્નમુક્તદાસજી, સ.ગુ. સ્વામી કૃષ્ણપ્રસાદદાસજી, સ.ગુ. સ્વામી જગતપાવનદાસજી, સ.ગુ. સ્વામી મુકુંદજીવનદાસજી, સ.ગુ. પુ. સ્વામી સ્વયંપ્રકાશદાસજી, સ.ગુ. પુ. સ્વામી શ્રીહરિદાસજી, સ.ગુ. પુ. સ્વામી બાલકૃષ્ણદાસજી, સ.ગુ. સ્વામી દેવકૃષ્ણદાસજી, સ.ગુ. સ્વામી રામસ્વરૂપદાસજી, સ.ગુ. શા. સ્વામી વિશ્વપ્રકાશદાસજી, સ.ગુ. પુ. સ્વામી કેશવજીવનદાસજી, સ.ગુ. સ્વામી લક્ષ્મીપ્રસાદદાસજી, સ.ગુ. સ્વામી જગજીવનદાસજી, શા. સ્વામી નારાયણમુનિદાસજી, કોઠારી સ.ગુ. સ્વામી દેવપ્રકાશદાસજી, કોઠારી શા. સ્વામી દેવસ્વરૂપદાસજી આદી સર્વે સંતમંડળ, મહિલા મંદિરના મહંત સાં.યો. સામબાઈ ફઈ આદી કચ્છના સમસ્ત સાં.યો. બહેનો, મુખ્ય કોઠારી મુરજીભાઈ કરસન શીયાણી, ઉપકોઠારી જાદવજીભાઈ વિશ્રામ ગોરસીયા, સલાહકાર રામજીભાઈ દેવજી વેકરીયા આદી ટ્રસ્ટીમંડળ તથા યશસ્વી યજમાનશ્રીઓના સપ્રેમ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ વાંચશો.

વ્હાલા ભક્તજનો... વિક્રમ સંવત ૧૮૭૯ વૈશાખ સુદ પાંચમના દિવસે ભગવાન શ્રીહરિએ અનહદકૃપા કરીને સ્વહસ્તે ભુજમાં શ્રીનરનારાયણદેવ પ્રસ્થાપિત કરી આપ્યા. કચ્છના ભક્તોને શ્રીનરનારાયણદેવ પ્રાપ્ત થતાં જાણે મરૂભૂમિમાં ભક્તિનું મેઘધનુષ રચાયું. ભક્તો જ્યારથી શ્રીનરનારાયણદેવને આશ્રિત થયા ત્યારથી તેમના જીવનના અનેક દુઃખો, પીડાઓ અને સંશયો નાશ પામ્યા છે. જેના પ્રત્યક્ષ ઉદાહરણોની હારમાળા જોવા મળે છે. સ્વયં સર્વાવતારી ભગવાન શ્રીસ્વામિનારાયણે જે દેવની પ્રતિષ્ઠા કરી હોય તે દેવના તો દર્શન માત્રથી જ આ લોક અને પરલોકના દુઃખો નાશ પામે તેમા કોઈ

સંશયને સ્થાન નથી. જ્યાં સુકી ધરતી ફાટ ફાટ કરતી હોય ત્યાં શ્રીનરનારાયણદેવના પ્રતાતે કરીને ધરતી લીલીછમ ચાદર ઓઢે એ તો આંખે જોયેલા પરચા જેવું છે. આજે પણ શ્રીનરનારાયણદેવની ધજા ચડાવવા માત્રથી જ ભક્તોના દુઃખ દૂર થાય છે. કચ્છ પ્રદેશની સુખ, શાંતિ અને સમૃદ્ધિમાં શ્રીનરનારાયણદેવનો જ પ્રતાપ રહેલો છે. રણ વિસ્તારમાં અમૃતના પરબસમુ આ દિવ્ય મંદિર અને તેમાં પણ જેના દર્શનથી હૈયે હરખ ન માય તેવા રાજાધિરાજ શ્રી નરનારાયણદેવ. પ્રભુની કૃપાદ્રષ્ટિથી ૨૦૦ વર્ષના ઈતિહાસમાં કચ્છની અભૂતપૂર્વ કાયાપલટ થઈ. શ્રીનરનારાયણદેવની પ્રતિષ્ઠાને ૨૦૦ વર્ષ પૂર્ણ થતા **શ્રીનરનારાયણદેવ દ્વિશતાબ્દી મહોત્સવ તા. ૧૮-૦૪-૨૦૨૩, ચૈત્ર વદ તેરસથી ૨૬-૦૪-૨૦૨૩, વૈશાખ સુદ છટ્ઠ** સુધી ઉજવવા જઈ રહ્યા છીએ. આ અમૃત સરીખા ભક્તિના મહાસાગરમાં તરબતર થવા આપણે સૌ ઉત્સુક છીએ.

વ્હાલા સત્સંગીબંધુઓ....આ ભવ્ય મહોત્સવમાં શ્રીનરનારાયણદેવ પીઠાધિશ્વર પ.પૂ.ધ.ધૂ. ૧૦૦૮ શ્રી કૌશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજ, પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી, પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી, અ.સૌ. લક્ષ્મીસ્વરૂપા પ.પૂ. ગાદીવાળાશ્રી, અ.સૌ લક્ષ્મીસ્વરૂપા પ.પૂ. મોટા ગાદીવાળાશ્રી દર્શનનું સુખ આપશે. દેશ-વિદેશથી અનેક ભક્તજનો પોતાના જીવનને પાવન કરવા પધારવાના છે તેમજ હિન્દુ સનાતન ધર્મના પૂજનીય સંતો મહંતો, રાજકીય મહાનુભાવો સહિત વિશિષ્ટ અતિથિઓ પધારશે. આ દિવ્ય મહોત્સવ અંતર્ગત અનેક આયોજનો થઈ રહ્યા છે તેમજ મહોત્સવ દરમ્યાન **શ્રીમદ્ સત્સંગિજીવન નવાહ્ન કથા પારાયણ**, અનેકવિધ પ્રદર્શનો, મહાપૂજા, વેદપારાયણ, બાલ પારાયણ, ૨૦૦ કુંડી શ્રીમહાવિષ્ણુયાગ તેમજ રાત્રિકાર્યક્રમો આયોજીત થવાના છે. આ મહોત્સવમાં આપણે સહપરિવાર પધારીને સત્સંગ, સેવા, સંસ્કૃતિ, સદ્‌વિદ્યા, સદ્‌વિચાર, સદ્‌ભાવના અને સત્કર્મના મહાસાગરમાંથી મહદ્‌અંશે પીયુષપાન કરવા, ભગવાન શ્રીનરનારાયણદેવની અસીમકૃપા તેમજ રાજીપો મેળવવા આપ સૌને હાર્દિક નિમંત્રણ પાઠવીએ છીએ.

આ દિવ્ય મહોત્સવમાં કચ્છના સમસ્ત સાંખ્યયોગી બહેનોને પધારવાનું હાર્દિક નિમંત્રણ પાઠવીએ છીએ.

લી. સદ્‌ગુરૂ મહંત પુરાણી સ્વામી ધર્મનંદનદાસજી એવં સર્વે સંતમંડળ તથા ટ્રસ્ટ્રીમંડળના ભાવભર્યાં જયશ્રી સ્વામિનારાયણ વાંચશોજી.

મંગળ કાર્યક્રમ

તા.૧૮-૪-૨૦૨૩ ચૈત્ર વદ ૧૩, મંગળવાર

સ્થાપન પૂજન : સવારે ૭-૦૦ થી ૮-૦૦

મહાપૂજા : સવારે ૭-૦૦ કલાકે

૨૦૦ કૂંડી મહાવિષ્ણુ યજ્ઞ : સવારે ૭-૦૦ કલાકે

ચતુર્વેદ પારાયણ પ્રારંભ : સવારે ૮-૦૦ સ્મૃતિ મંદિર

બાલ પારાયણ : સવારે ૮-૦૦ કલાકે બાલ મંડપમ્

દીપ પ્રાગટ્ય : સવારે ૯-૦૦ કલાકે

કથા પ્રારંભ : સવારે ૯-૧૫ કલાકે

કથા : બપોરે ૩-૩૦ કલાકે

શ્રી નરનારાયણદેવ પૂજન સાંજે ૫-૩૦ કલાકે

રાત્રી કાર્યક્રમ : રાત્રે ૮-૩૦ કલાકે

તા.૧૯-૪-૨૦૨૩ ચૈત્ર વદ ૧૪, બુધવાર

શ્રી સ્વામિનારાયણ સેવા આશ્રમ ઉદ્‌ઘાટન સવારે ૮-૦૦કલાકે

કથા : સવારે ૮-૩૦ અને બપોરે ૩-૩૦ કલાકે

શ્રી ઘનશ્યામ જન્મોત્સવ : સાંજે ૫-૩૦ કલાકે

રાત્રી કાર્યક્રમ : રાત્રે ૮-૩૦ કલાકે

તા.૨૦-૪-૨૦૨૩ ચૈત્ર વદ ૩૦, ગુરૂવાર

કથા : સવારે ૮-૩૦ અને બપોરે ૩-૩૦ કલાકે

રાત્રી કાર્યક્રમ : રાત્રે ૮-૩૦ કલાકે

તા.૨૧-૪-૨૦૨૩ વૈશાખ સુદ ૧, શુક્રવાર

કથા : સવારે ૮-૩૦ અને બપોરે ૩-૩૦ કલાકે

ભુજ આગમન મહોત્સવ : સાંજે ૫-૩૦ કલાકે

રાત્રી કાર્યક્રમ : રાત્રે ૮-૩૦ કલાકે

તા.૨૨-૪-૨૦૨૩ વૈશાખ સુદ ૨, શનિવાર

કથા : સવારે ૮-૩૦ અને બપોરે ૩-૩૦ કલાકે

રાત્રી કાર્યક્રમ : રાત્રે ૮-૩૦ કલાકે

તા.૨૩-૪-૨૦૨૩ વૈશાખ સુદ ૩, રવિવાર

કથા : સવારે ૮-૩૦ અને બપોરે ૩-૩૦ કલાકે

મહાભિષેક કળશયાત્રા : સાંજે ૬-૦૦ કલાકે

રાત્રી કાર્યક્રમ : રાત્રે ૮-૩૦ કલાકે

તા.૨૪-૪-૨૦૨૩ વૈશાખ સુદ ૪, સોમવાર

કથા : સવારે ૮-૩૦ અને બપોરે ૩-૩૦ કલાકે

શોભાયાત્રા : બપોરે ૧-૩૦ કલાકે

રાત્રી કાર્યક્રમ : રાત્રે ૮-૩૦ કલાકે

તા.૨૫-૪-૨૦૨૩ વૈશાખ સુદ ૫, મંગળવાર

મહાભિષેક : સવારે ૬-૦૦ કલાકે

અન્નકૂટ : સવારે

કથા : સવારે ૮-૩૦ અને બપોરે ૩-૩૦ કલાકે

રાત્રી કાર્યક્રમ : રાત્રે ૮-૩૦ કલાકે

તા.૨૬-૪-૨૦૨૩ વૈશાખ સુદ ૬, બુધવાર

કથા : સવારે ૮-૩૦

ઉત્સવ સમાપન સમારોહ : બપોરે ૧૨-૦૦ કલાકે

મહારાજોપચાર પૂજા : બપોરે ૩-૦૦ કલાકે

સ્વયં સેવક સભા : બપોરે ૩-૩૦ કલાકે

રાત્રી કાર્યક્રમ : રાત્રે ૮-૩૦ કલાકે

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

राष्ट्रीय ध्वज वंदना

अपने ओकलैण्ड (न्यूजीलेण्ड) मंदिर द्वारा नूतन सहजानंद कॉम्प्लेक्स के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. कांतिभाई पटेल का सम्मान करते संत मंडल।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

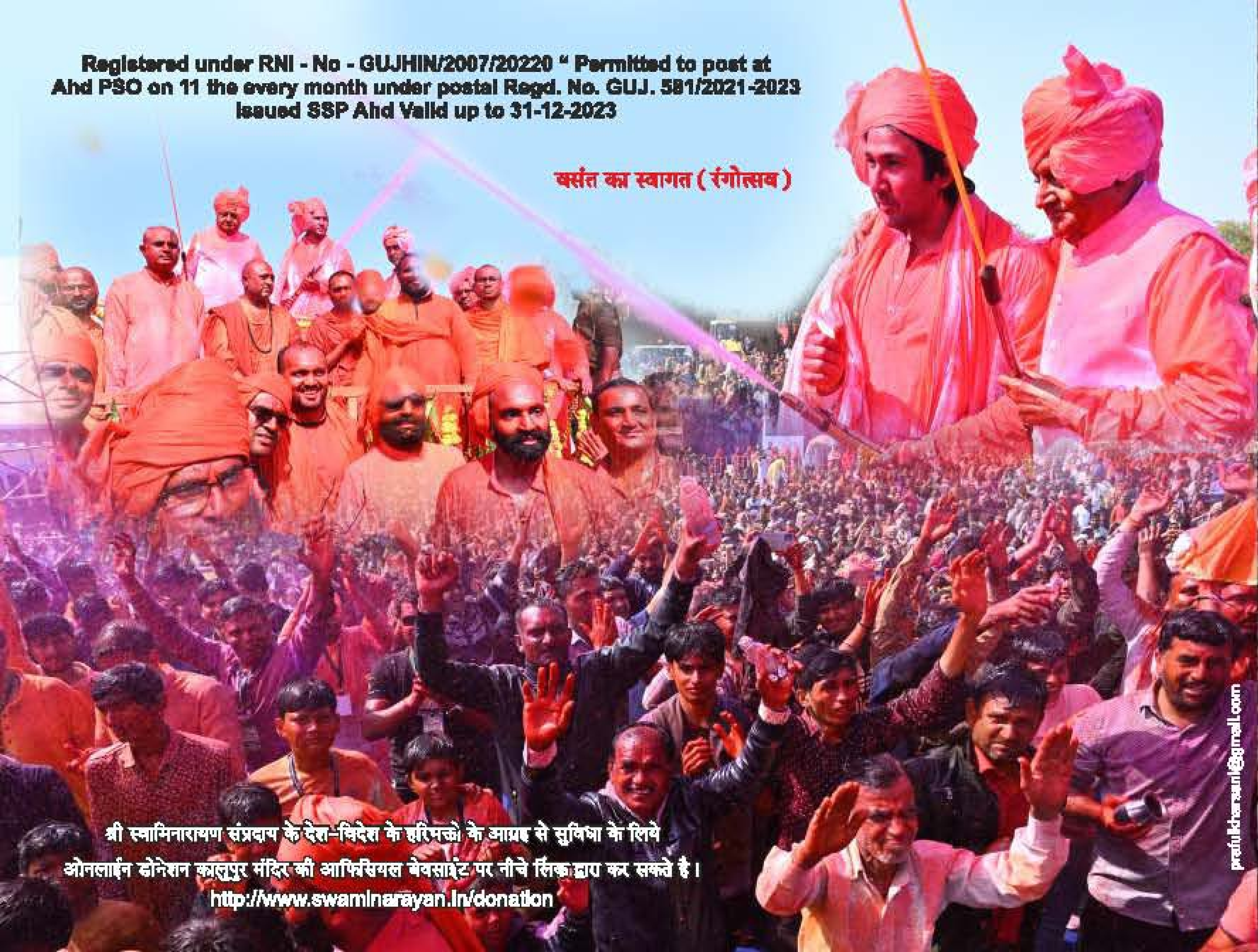

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह से सुविधा के लिये
ओनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की आफिसियल वेबसाईट पर नीचे लिंक द्वारा कर सकते है।
http://www.swaminarayan.in/donation